पद भाग क्र.२

७ :– चेतावणी को अंग

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	बंदा अंतकाळ पिछ्तासी ३५	१
२	बांदा गाय गाय हर गाय रे ३६	१
३	बंदा जाग जाग नर जाग रे ३९	२
४	बांदा काहा कियो नर होई ४१	३
५	बंदा नाँव सताबी लिजे ४८	५
६	बंदा सरण सबळ की गेहेरे ६४	५
७	चाँवड मान्या जोय ९३	६
८	धिृग लाणत मन आप कूं हो ११२	७
९	अे चेतावण जम लोक का ११७	८
१०	अेका अेकी रे तु चल जासी १२१	९
११	ग्यान सुणे सुण चेत ज्यो रे १३६	१०
१२	हंसा छाडोनी जुग को नेह १३९	११
१३	हेला दे दे संत पुकारे १५४	१२
१४	जब जम आण नगर कुं घेरे १५९	१३
१५	कपटी राम न पावे हो १९२	१४
१६	मै तुज बूझुँ रे प्राणिया २१६	१६
१७	मन रे गाफल चेत संवेरो २२१	१६
१८	मन रे सिमर सिमर हल सांई २२५	१७
१९	मन रे मत फुले मुढ गिवांरा २२८	१८
२०	मात पिता सुत बंधू तेरा २३१	१९
२१	नही रे अेसो लगन दूजो कोय २४५	२०
२२	पांडे से सब मधम कहावे २७१	२२
२३	प्राणी क्यु हर बिसऱ्यो रे २८५	२२
२४	प्राणीयां काय तूं सुतो रे २८८	२४
२५	प्राणियां रे समझ सिंमरो राम २९०	२४
२६	सब भ्रम छाड दईजे रे ३०४	२६
२७	साहेब जी सें ड्रीये मन रे ३२३	२७
२८	समझो हो नर समझ नार ३२९	२८
२९	संतो भजलो केवल रामा ३३२	२९
३०	संतो काळ सिर भारी हे ३६०	३१
३१	सुण लिज्यो लो सुण लिज्यो लो ३८४	३२
३२	सुणज्यो नर सब आय केरे ३८५	३२

३२	सुणो सब या बातां किम पावे ३९३	३४
३३	ताको भुल आण नही ध्यावे ३९५	३५

३५

|| पदराग सोरठ ||

बंदा अंतकाळ पिछतासी

बंदा अंतकाळ पिछतासी ||

भजन बिना तेरी चुप चतुराई || सबी धूळ में जासी ||टेर||

अरे बंदा,अरे प्राणी,तू कितना भी सयाना, होशियार रहा,चतुर रहा और तू यह सयानापन, होशियारी यम से छुडानेवाले रामनाम का भजन करने में नहीं लगाई,तो यह तेरा सयानापन ,होशियारी धुल में मिल जाएगी। तेरा अंतकाल आएगा तब तुझे जालिम यम पकडेंगे तब तूने यह सयानापन,होशियारी यम से छुडानेवाले रामनाम के भजन में लगाई नहीं इसका पछ्तावा करेगा। ||टेर||

जंवरो जोर जोरावर शिर पे || जीव कूं बांध गुडावे ||

कर मुख आगे लेर चलेलो || तब आडो कुण आवे ||१||

यह यम बहुत ही जबरदस्त,मस्तक के उपर है। यह यम इस जीव को बाँधकर,गठिया देगा और जीव को अपने मुँह के सामने करके,लेकर चलेगा,तब यम के सामने कौन आएगा? (और जीव को ले जाने के लिए,यम को कौन मना करेगा?)||१||

रे नर चेत अचेत अग्यानी || याहाँ कोई नहि तेरा ||

निस बासर शिर करम खिवेरे || जम तक तक दे फेरा ||२||

अरे मनुष्य चेत,होशियार हो,अचेतन मत रह,अज्ञानी बन मत यहाँ तुझे यम से छुडानेवाला तेरा कोई नहीं है। रात-दिन तेरे सिरपर तुने किए हुए काल कर्म तुझे काल के मुख में डालने के लिए जोर लगाके बैठे है। यम तुझे ले जाने के लिए सही मौका देखते तेरे सिरपर फेरे मार रहा है। ||२||

तीन लोक में जीव रळवळे || भवताँ बोहो जुग बीता ||

के सुखराम सुणो नर नारी || भगत करे सो जीता ||३||

यह जीव अपने काल कर्म के अनुसार तीन लोको में गोते खा रहा है। इसीतरह इस जीव के स्वर्ग,मृत्यु,पाताल इन तिनो लोको में भटकते भ्रमते भ्रमते अनेक युग व्यतीत हो गए है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सभी नर-नारी सुनो,जो रामजी की भक्ति करेंगे वही ऐसे जालिम यम से जितेंगे और अन्य सभी यम के मुख में दु:ख भुगतते पडेंगे। ||३||

३६

|| पदराग सोरठ ||

बंदा गाय गाय हर गाय रे ||

आन उपाय सकळ हे झूठी || सो सब ही छिटकाय रे ||टेर||

बंदा,अरे जीव,तुझे अमर होना है तो सतस्वरुप रामजी का भजन कर। काल के दु:ख

मिटाने के लिए रामजी की भक्ति छोड्कर अन्य सभी भक्तियाँ और उपाय झुठे है। अन्य सभी भक्तियाँ और उपायोंसे जीव अमर नहीं होता। उसका काल का दु:ख नहीं मिटता इसलिए अन्य सभी भक्तियाँ और उपाय छोड दे। ।।टेर।।

सो शिवऱ्यां सो अमर हुवे रे ।। काळ जम डर माने ।।
सुर नर मुनि शंकर बंदे तो ।। बिसन भली बिध जाणे ।।१।।

अरे बंदा,जिसने जिसने सतस्वरुप हर का स्मरण किया है वे सभी अमर हुए है। जन्म मरण से मुक्त हुए। ऐसे हर के स्मरण करनेवालों का पारब्रम्ह काल याने पारब्रम्ह यमराज भी डर मानता है और ऐसे संतोंसे धुजता है। स्वर्गादिक के सभी देवता,पृथ्वी लोक के मनुष्य ,पाताल के सभी नागलोग,ऋषीमुनी,शंकर,विष्णु,ब्रम्हा,शक्ति ये सभी रामभजन करनेवाले संत काल से मुक्त हो गए याने अमरदेश पहुँचकर अमर हो गए यह बहुत अच्छी तरह से जानते है इसलिए ये सभी इन संतों की वंदना करते है। ।।१।।

काटे करम आगला सारा ।। फेर करम नहि लागे ।।
भव सब तोड मिले साहिब में ।। साँसो सब ही भागे ।।२।।

ऐसे रामभजन करनेवाले संतोंके आगे से अभी तक हुए सभी संचित कर्म कट जाते है और नये क्रियेमान कर्म एक भी नहीं लगते। ये रामभजन करनेवाले संत भवबंधन तोड्कर साहेब में मिल जाते है ऐसे रामभजन करनेवाले संतों की काल के दु:खों की सभी चिंता भाग जाती है। ।।२।।

बार बार मोसर नहि आवे ।। ओ मिनषा तन भाई ।।
के सुखराम भजो साहिब कूं ।। जिण आ मांड उपाई ।।३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी,नर-नारी को कह रहे की,यह मनुष्य तन ४३,२०,००० वर्ष तक चौरासी लाख योनियों के दु:ख भोगने के बाद मुश्किल से एक बार मिलता इसलिए जिस साहेब ने यह सृष्टी बनाई,तुझे बनाया ऐसे साहेब का भजन कर व अमर हो जा। ।।३।।

३९
।। पदराग सोरठ ।।

बंदा जाग जाग नर जाग रे ।।
सोयर काय बिगुचे मूरख ।। ऊठ भजन सूं लाग रे ।।टेर।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बंदा याने प्राणी को कहते की,अरे प्राणी,मोह ममता में सो मत,मोह माया में से जाग,होशियार हो,चेतन हो। मोह ममता में सो के तू तेरा भवसागर में से तिरने का काम बिघड्ने मत दे। तू उठ और रामनाम का भजन कर। ।।टेर।।

तो सिर गजब काळ की आई ।। सब कुळ देखत लूटे ।।
तीन लोक ओ राम बिना रे ।। कांहु जाय न छुटे ।।१।।

तेरे सिरपर कालरुपी लुटनेवालों की धाड आयी है। वह काल कुल परिवार के सामने तुझे लुटेगा याने तेरा जीव तेरे देह से निकाल के नरक में लेके जाएगा। तू इस काल लुटारु से राम छोड के तीन लोको में के कोई भी देवता के प्रताप से बच नहीं सकता। ||१||

तेरी जोय फजीती व्हेला || अंत काळ के मांही ||
पड़सी मार घणी गुर्जा की || कोई छुडावे नाही ||२||

तेरी अंतकाल में बहुत फजिती होगी। तेरे सिरपर यमदूत गुरुज से मार देंगे तब यम के मार से तुझे कौन छुड्वाएगा? ||२||

नर्क कुंड दोजख दुख भारी || प्रळो कहयो न जावे ||
ग्रभवास मे उंधो टेरे || झिणा बोहो दुख पावे ||३||

हंस पर नर्ककुंड में असह्य भारी दु:ख पड्ते। हंस बार-बार चौरासी लाख योनि में प्रलय में पड्ता और हर एक योनि में गर्भ का दु:ख भुगतता। गर्भ में जीव को उलटा लटकाया जाता ऐसे बडे-बडे दु:ख जीव को भुगवाए जाते। जीव को झिने दु:ख तो अनगिनत भुगतने पड्ते वे बताये भी जाते नहीं। ||३||

चेते क्युं न अचेतन अंधा || क्युँ जीत्योडो हारे ||
के सुखराम बाज तीतर ज्यूं || जम तोय पटक पछाडे ||४||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज प्राणी को कहते,अरे अंधे,तू होशियार हो,तू होशियार क्यों नहीं होता?तुझे मनुष्य देह मिला है,यह मनुष्य देह मिलने का बडा डाव हाथ में आया है। तू अब यम को जीत,मनुष्य देह से राम-राम रट के यम को मारते आता इसलिए यह मनुष्य देह का हाथ में आया हुआ डाव हार मत। जैसे बाज पंछी तितर पंछी को झपटके पकड्ता और मरनेतक पटकता वैसा यम तुझे पकडेगा और तुझे पटक-पटक के तेरे देह में से प्राण निकालेगा। ||४||

४१

|| पदराग सोरठ ||

बंदा काहा कियो नर होई ||
सिरजण हार स्याम तूं बिसऱ्यो || चाल्यो जनम बिगोई ||टेर||

अरे बंदा,तुझे नर तन मिलने पर भी तुने क्या किया? तुझे यह मनुष्य शरीर काल को मारकर सिरजणहार श्याम पाने के लिए सिरजणहार श्याम ने दिया था परंतु तुने यह सिरजनहार श्याम प्रगट कर काल को मारने की रीत भुल गया और काल को मारने की रीत न करते माया कर्म करके काल के दु:ख देने की रीत को मजबुत बनाया है याने मिला हुआ मनुष्य तन बिघाड्कर जन्म गमाया है। ||टेर||

नर नारी ओ जगत रिजायो || कर कर सेणप सिपती ||
आन देव कूं निव निव पूजे || राम न शिवऱ्यो बिपती ||१||

अरे बंदा,तु इस मनुष्य शरीर से इस संसार के स्त्री-पुरुषोंको जिस से मोक्ष नहीं होता

ऐसा झुठा सयाणापण करने में लगाया तथा रामजी को छोड़कर चौरासी लाख योनि में डालनेवाले अन्य देवताओं को नमन कर करके पुजते रहा। तुने विपत्ती से निकालनेवाले रामजी का विपत्ती पड़ने पर भी स्मरण नहीं किया।

झुठा सयाणापण(विस्तारित)–:
जिस–जिस विधी से मोक्ष देनेवाले साहेब रिजते नहीं और परिवार,समाज,गाँव के लोग, राज के लोग जो माया में पुरे रचे मचे है ऐसे मलमुत्रधारी स्त्री–पुरुष हर्षित होते ऐसी विधियाँ करना याने मोक्ष में न पहुँचते चौरासी लाख योनि में अटक के गिरना ऐसी विधियों को झुठा सयाणापण कहते है। ||१||

जाग्यो रात करम के कारण || जूँझ्यो माया काजे ||
स्वारथ कूं नर बुरी पलोटे || परमारथ सूं लाजे ||२||

रात–रात विषयोंके कर्मो के कारण जागते रहा। माता,पिता,पुत्र,पुत्री,धन,राज ऐसे साथ न चलनेवाली झुठी माया के लिए रात–दिन झुंझा परंतु सतसंगत के लिए कभी भी जागा नहीं। रामजी के लिए कभी भी झुंझा नहीं। माया के स्वार्थ के लिए अंतर में नहीं जचती ऐसी कैसी भी बुरी बात रही तो भी निभा दी और तु परमार्थ याने जीव काल से मुक्त हो सकता इसमें शर्माते रहा। ||२||

कीया अंध फंद बोहो तेरा || सीख्यो चुप चतुराई ||
अेक न सीख्यो राम रहु को || जिण आ मांड उपाई ||३||

चौरासी लाख योनि में पड़ने के अंधा धुंदी के याने बिना सोच समज के कितने ही नीच फंद किए और झुठे माया की बारीक से बारीक चतुराईयाँ सिखा परंतु एक राम रहु का या ने जिसने यह सृष्टी उत्पन्न की और तुझे उत्पन्न किया उसको पाने की विधी नहीं सिखी। ||३||

हरजन ग्यान कोरडा मारे || तब उतर बोहोल्यावे ||
के सुखराम भूत ज्युँ मनवो || डाळा पान बतावे ||४||

ऐसे रामजी को मिला देनेवाले हरजन याने रामजी के जन तेरे अज्ञानपन के कारण काल के मुख में जाके पड़ने के स्वभाव पर काल में से निकलने का निर्भय देश के विज्ञान ज्ञान के चाबुक देते तब तू ऐसे संतों को अनेक प्रकार के जिसमें कुछ तथ्य नहीं ऐसे जबाब पर जबाब देता आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,अरे मना,तू ऐसे हरीजन को भूत के समान जबाब मत दे। भूत के देह की समज इतनी हलकी रहती की उसे पेड का बीज दिखता नहीं। उसे पेड की ट्हनियाँ और पत्तें ही दिखते। इन ट्हनियों के साथ और पत्तों के साथ वह रात–दिन खेलते रहता। उस पेड को लगे हुए पेड के फल बीज से लगे यह दिखता नहीं। उसे यह फल,ट्हनियाँ,पत्तें होने के कारण लगे ऐसा लगता। इसीतरह मन को सतस्वरुप मुक्ति देनेवाला,सृष्टी बनानेवाला,बीज स्वरुपी सिरजनहार दिखता नहीं।

उसे सतस्वरुपी मुक्ति देनेवाले ट्हनियों समान ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,अवतार और पत्तों समान दुर्गा,सितला,भेरु,भोपा,क्षेत्रपाल,खंडोबा यही दिखते इसलिए मन सतस्वरुप न खोजते ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,अवतार,दुर्गा,सितला,भेरु,भोपा,क्षेत्रपाल की भक्ति करते।।४।।

४८

।। पदराग सोरठ ।।

बंदा नाँव सताबी लीजे ।।

जो कुछ हौस हुवे दिल भीतर ।। तो परमारथ कीजे ।।टेर।।

अरे बंदा,अरे जीव,तु रामनाम बिना विलम्ब करते जल्दी ले। अरे,तेरे दिल में कुछ हौंस याने उल्हास है तो जीव को रामनाम लेकर काल के मुख से निकालने का परमारथ कर। ।।टेर।।

तो शिर काळ भँवे निस वासर ।। नित फेरा दे जावे ।।

कबुयक आण अचाणक जंवरो ।। काट काट ज्यो खावे ।।१।।

अरे जीव,तेरे मस्तक के उपर रात-दिन काल भ्रमर कर रहा है। तुझे दबोचकर खाने के लिए तेरे सिरपर नित्यप्रती फेरे मार रहा है। कभी भी यह यम तुझे न समजने देते अचानक डसकर काट-काट कर खा जाएगा। ।।१।।

ओसर जाय नीर ज्युँ सिलतां ।। पाछे धूळ रहे रे ।।

राम भजन बिन सब पिछतासी ।। साध सकळ सो कहेरे ।।२।।

अरे बंदा,तेरा आयुष्य बरसात में दो कराडे भरी हुई नदी जैसे धुपकाले में सुक जाती और पिछे सिर्फ धुल ही धुल रहती वैसे तेरे महासुख में ले जानेवाला साँसों से भरा फुला आयुष्य खतम हो जाएगा और अन्तीम में चौरासी लाख योनि में ले जानेवाले धुल के समान कालरुपी कर्म पिछे लग जाएँगे। अरे,राम भजन बिना सभी जगत के ज्ञानी,ध्यानी, नर-नारी पस्तावा करते ऐसा सभी साधु कहते आए है और कह रहे है। ।।२।।

हंस बटाऊं ओ जुग मेळो ।। सोदो समझ बसाइये ।।

के सुखराम बूजकर बिणजे ।। मूळ हार मत जाइये ।।३।।

यह हंस संसार रुपी मेले में याने यात्रा में आया हुवा मुसाफिर है। जैसे मेले में अनेक लोग आते जाते रहते और हलका-भारी सौदा करते इसी प्रकार यह मुसाफिररुपी हंस संसाररुपी मेले में बडा सौदा करने के लिए आया है। अब इस मेले में समजकर मोक्षरुपी बडा सौदा खरीद ले। इस संसार में मोक्षरुपी बडे-बडे सौदे जिन-जिन संतोंने किए उन्हें पुँछ-पुँछ कर मोक्ष का सौदा कर ले और तुझे मिली हुई साँसा रुपी पुंजी गमाकर चौरासी लाख योनि में मत जा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बंदा को कह रहे है। ।।३।।

६४

।। पदराग सोरठ ।।

बंदा सरण सबळ की गेहेरे ।।

निर्बळ सरण सकळ जम तोड़े ।। अेक पारब्रम्ह सुं रहे रे ।।टेर।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,अरे बंदा,अरे प्राणी,तुझे काल कसाई से जिता देगा ऐसे बलवान सतस्वरुप पारब्रम्ह की तू शरण ले। ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ऐसे निर्बल देव का यदि तूने शरणा लिया होगा तो भी तुझे काल कसाई खाएगा। ।।टेर।।

ऐसो जबर काळ कसाई ।। तीन लोक चुण खावे ।।
ब्रम्हा बिस्न महेसर सत्ती ।। सब सिर ताळ बजावे ।।१।।

यह काल कसाई जबर है। वह मृत्युलोक,पाताललोक,स्वर्गलोक ऐसे सभी तीन लोक में के जीवों को खोज खोज के खाता। वह(३लोक १४ भवन के)ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इन सभी नाथोंको अपने वश याने हुकुम में रखता है और समय आने पर उनको भी गीट जाता है। ।।१।।

ओऊँम सब्द अजपो कहीये ।। फेर भृगुटी को ध्यानी ।।
सुर नर जोगी सकळ जम खाया ।। खाया पीर मत ग्यानी ।।२।।

काल ने खाना नहीं चाहिए इसलिए ओअम–अजप्पा शब्द की साधना करके भृगुटी में चढके बैठते तो ऐसे चढके बैठे हुए भृगुटी के ध्यानी को काल कभी ना कभी खाता उसी तरह देवता,मनुष्य,जोगी,पीर और मतज्ञानी इन सबको काल खाता ऐसा यह काल कसाई है। ।।२।।

जो जन सुणो काळ सूं जीतो ।। उलट चडे आकाशा ।।
के सुखराम छाड मन पवना ।। करे आद घर बासा ।।३।।

जो संत काल से बलवान रहनेवाले सतस्वरुप पारब्रम्ह की शरण लेता,वही संत काल को जितता और अपने घट में उलटके काल के परे रहनेवाले सतस्वरुप आकाश में चढता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,ऐसा त्रिगुटी को पहुँचा हुवा संत त्रिगुटी के घर मन को और दसवेद्वार में पवन को त्यागता और सतस्वरुपी आद घर को बास करता सिर्फ ऐसे संत को काल खाता नहीं। ।।३।।

९३
|| पदराग मंगल ||

चाँवड मान्या जोय

चाँवड मान्या जोय ।। छीजे तन भागसी ।।
क्षेत्र पांळ कूं मान ।। क्रम बोहो लागसी ।।१।।

चांवड माता की भक्ती करता है और उसे निरअपराध प्राणी की बली देता है उसका तन रोगीट होकर क्षीण हो जाता है या कच्चे उम्र में छुट जाता है। यह जीव नरक में जा पड्ता है। खेतपाल की भक्ति कर उसे बली चढाता है,उसे नरक के कठीण कर्म झिगते है और मरने के पश्चात नरक में पड्ता है। ।।१।।

अर पीरांसूं कर हेत ।। नरक मे जायगो ।।
मोगा को कर प्यार ।। धक्का बोहो खायगो ।।२।।

पीरो से प्रेम कर उस प्रेम मे जीवोंकी बली देता है वह नरक में जा पड्ता है। मोगा से प्रेम कर निरअपराधी प्राणी की बली चढ़ाता है और काल के अनेक धक्के खाता है। ।।२।।

भेरूं सितळा पूज ।। साहेब सूं दूर रे ।।
दुरगा को कर पाठ ।। करमा को पूर रे ।।३।।

भेरू ,सितला को पूज कर बली चढ़ाता है,उससे साहेब दुर हो जाता है और जम बुरी तरह नरक में डालने के लिए घेर लेता है। दुर्गा का पाठ रखकर जीवों के प्राण देता है उसके यहाँ नरक के कर्मो के पूर बहते है। ।।३।।

पाबू की कर सेव ।। धका बोहो खावसी ।।
आन देव कूं पूज ।। नरक में जावसी ।।४।।

पाबु को बली चढ़ाकर उसकी सेवा करता है,वह काल के बहुत धक्के खाता है। आन देव को पुज आनदेव के सामने प्राणी चढ़ाता है और उसकी बली देता है,वह जीव नरक में जा पड्ता है। ।।४।।

मामे देव कूं मान ।। ईसरी ध्यावसी ।।
के सुखदेव वे जीव ।। चोरासी जावसी ।।५।।

मामे देव इसरी कु मानता कर निरअपराधी प्राणी की बली देता है वह जीव चौरासी लाख के कठीन दु:ख में पड्ता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले।।५।।

११२

।। पदराग धमाल ।।

ध्रिग लाणत मन आप कूं हो
ध्रिग लाणत मन आप कूं हो ।। तुं हर तज सेवे आन ।। टेर ।।

अरे मन,तुम्हें धिक्कार है,तुझे लानत है। अरे,तू हर(रामजी को छोड़कर,अन्य दूसरे देवों की सेवा करता है,तुझे धिक्कार है,तुझे लानत है। ।। टेर ।।

तन के बिच बिराजे सांई ।। तां की दिशा न जाय ।।
आठ पोहर चोसट घड़ियाँ ।। सो रहे भटक जुग मांय ।। १ ।।

अरे,इस शरीर के अंदर ही साँई(स्वामी)रहता है। उस स्वामी के ओर तो तु जाता नहीं और आठो प्रहर,रात-दिन और चौसठ घड़ी संसार में वासना के सुखोंमे भटकते रहता, या सोया रहता है। ।।१।।

आळ जंजाळ बोहोत बिध बोले ।। नाच रहयो दिन रात ।।
सरब उपाय अनेक कर हे ।। हरि दिसने कन बात ।। २ ।।

तूं बिना काम का मतलब फिजुल के बहुत तरह से बोलता है और उसी में रात-दिन रच मचा रहता है। तू दूसरे तो अनेक प्रकार के,सभी उपाय करता है परंतु हर के तरफ की तो,थोडीसी भी बात नहीं करता और ना सुनता है। ।।२।।

पाछे कूं नर सोचत हे हो ।। आगम सोच न कोय ।।

नासत सुं नित खसत हे हो || आ सत गहे न कोय || ३ ||

मैं मर गया तो मेरे बाद में मेरे पीछे मेरे कुटुंब परिवार का कैसे होगा इसकी चिंता करता परंतु मेरे मर जाने पर मेरे हंस का आगे कैसा होगा इसकी कुछ भी चिंता नहीं करता है। नास्त याने नाशवान मुर्तियोकी और अवतारोंकी पूजा नित्य मेहनत करके करता और जो सत है जिसका नर कभी भी तीनो काल में नाश नहीं होता ऐसे रामजी को जरासा भी धारण नहीं करता। ।।३।।

जिन रटियाँ सुख अणंत लहीजे || जाय अनन्त फंद खूल ||
कहे सुखदेव मे कहत पुकारी || ताय निमक मत भूल || ४ ||

रामनाम का रटण करने से,अनंत सुख मिलते है और अनंत दुःख के फंद छूट जाते है ऐसा यह रामनाम है इसलिए उसे पलभर भी,भूलो मत ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज पुकार पुकार के कहते है। ।।४।।

११७

|| पदराग जोगारंभी ||

अे चेतावण जम लोक का

अे चेतावण जम लोक का || कोई नर ध्यावे ||
मार पडे सिर ऊपरे || नरकी दुख पावे || टेर ||

नर नारीओं के नीच स्वभाव के अनुसार नर-नारियोंके सिरपर जम के मार पड्ते तथा नर-नारी नरकीय दु:ख भोगते जिस-जिस स्वभाव से जम का मार पड्ता,नरकीय दु:ख पड्ते उन स्वभाओंके जीव संत ज्ञान से चेत जाएँगे और साहेब का ध्यान करेंगे वह सभी जीव साहेब के सुख पाएँगे। ।।टेर।।

निंद्यां करे सो नीच हे || कड़वी कह कोड़ी ||
दगो करे सो जम रे || लपटी सुण ओढी || १ ||

निंद्या करना यह नीच,कड्वी बोली बोलना यह कोडी,दगा करना यह जम,लंपटी रहना यह ओढी के स्वभाव समान है। जगत में नीच,कोडी,जम,ओढी जैसे दु:ख भोगते वैसे ये केवली संतों की निंद्या करनेवाले,केवली संतोंसे कड्वी बोली बोलनेवाले,केवली संतोंसे दगा करनेवाले तथा स्त्री लंपटी जम के दु:ख भोगते। ।।१।।

आण अडे. सो भंगेरियो || दुख देसो दाणुं ||
बाद करे सो बिकार हे || फिर बिकळी जाणो || २ ||

आ आकर अड्ना यह भंगी,दु:ख देना यह राक्षस,विवाद करना यह विकली के समान विकारी स्वभाव है। जगत में भंगी,राक्षस,विकली जैसे दु:ख भोगते,वैसे संतो के ज्ञान से आ आकर अड्ता,संतो को दु:ख देता,संतों से विवाद करता ये जम के महादु:ख भोगता। ।।२।।

ग्यान सुणे बूजे नहीं।। सो जड कहावे ||

जमराय दरबार में ।। सीसे सूर न्हावे ।। ३ ।।

संतो का ज्ञान सुणते और संतो से मोक्ष का भेद पुछ्ते नहीं वे पत्थर के समान जड है। ये सभी जमराज के दरबार में सीसे सूर न्हावे। ।।३।।

अे अंग लछन नर नार मे ।। नरका चल जावे ।।

जन सुखिया तिहुँ लोक मे ।। कोई भीर न आवे ।। ४ ।।

इसप्रकार संतों के साथ बर्ताव करनेवाले स्वभाव के लोग नरक में जाकर पड्ते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इन स्वभाव के लोगोंपर तीन लोक चौदा भवन में किसी को दया नहीं उपजती। ।।४।।

१२१

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

अेका अेकी रे तुं चल जासी

अेका अेकी रे तुं चल जासी ।। अे कोई लार न आसी रे लो ।। टेर ।।

अरे प्राणी,तु एका एकी अकेला चले जाएगा। ये कोई भी तेरे साथ मे नहीं चलेंगे। ।।टेर।।

रे मन मुरख चेत संवेरो ।। गाफल कांय ठगावे रे ।।

हेत करे बोले मिठी बाणी ।। अे कोई लार न आवे रे लो ।। १ ।।

अरे मुरख,जल्दीसे हुशार हो,गाफील रहकर क्यों ठगा जा रहा है। जो जो भी आज तेरे से प्रिती करते,मीठी वाणी बोलते वे कोई भी तु जब जाएगा तब तेरे साथ नहीं आएँगे। ।।१।।

अेसी काया तेरी बणी हे ।। आ कोडी के काम न आवे रे ।।

कीड़ी मकोड़ी मरघट जाळे ।। उलटो दु:ख दे जावे रे लो ।। २ ।।

तेरी काया ऐसी बनी है जो मरने के बाद किसी के भी उपयोग में नहीं आती उलटा जहाँ तेरे काया को अग्नी दाग देते वहाँ असंख्य जीव जंतु जलकर भस्म हो जाते मतलब मरने के पश्चात भी दु:ख देनेवाली तेरी काया है। ।।२।।

बिना नाव सब झूट सगाई ।। जे ना ना बिध की क्ावे रे ।।

सबही रया बांगज देता ।। जम उचक ले जावे रे लो ।। ३ ।।

रामनाम के सिवा दुसरे सभी पत्नी,पुत्र,भाई,बहन आदि सभी समंधी झुठे है। ये सभी के सभी यहाँ पर रोते रह जायेंगे और तुझे यम झपट कर ले जाएगा। ।।३।।

याहाँ मोहो जिण सूंरे तें नर बांध्यो ।। हेत करे कर माने रे ।।

भीड़ पड़ेगी जाँ दिन तो कूं ।। सब रेगा सुण काने रे लो ।। ४ ।।

तुने जिससे जिससे मोह बांधा है,प्रिती की है वे सभी जिस दिन तेरे उपर काल का संकट पड्गा,उस दिन कोई भी तेरे साथ नहीं चलेंगे सभी किनारे हो जाएँगे। ।।४।।

रे मन झूटा अे झूटा सारा ।। ओ जुग जम की फासी रे ।।

याँ सूं मोहो करे हर भूले ।। वहाँ तुज कोण छुडासी रे लो ।। ५ ।।

अरे मन,ये सभी झुठे है। यह सारा जगत जम के फाँसी से बांधा हुआ है। इनसे मोह

करके तु हर को भुल गया है परंतु तुझे जब जम की फाँसी लगेगी तब तुझे जम से कौन छुडायेगा? ।।५।

याहाँ का सुख दु:ख सब ही सोरा ।। व्हाँ का दुरलभ भाया रे ।।
नरक कुंड मांही ठेलज देसी ।। प्राण सहे बंदे काया रे लो ।। ६ ।।

यहाँ के दु:ख सभी आसान है परंतु जम के घर के दु:ख बहुत कठीन है। यह जम तुझे नरककुंड में डालेगा। वहाँ जम तेरे शरीर को भाँती–भाँती के कष्ट देगा,वे सभी कष्ट तेरे प्राण को सहने पडेंगे। ।।६।।

संत पुकारी हेला देवे ।। सुण लीजो नर नारी रे ।।
राम रतन धन त्यागज बेठो ।। आ गेली हे मत्त तमारी रे लो ।। ७ ।।

संत सभी,नर–नारीयों को ताण ताण कर कह रहे है कि,तुम्हारी यह रामरतन धन त्यागने की मती पगली है। ।।७।।

जुग सूं हेत कियो तें भारी ।। राम नाव नहींगावे रे ।।
के सुखराम केहे सब हरजन ।। ओ बांध्यो जमपुर जावे रे लो ।। ८ ।।

तुने इस कुटुंब परिवार,गोत्र से बहुत भारी प्रिती की और रामनाम से जरासी भी प्रिती नहीं रखी इस कारण तुने रामनाम को गाया नहीं। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,रामनाम नहीं रटा इसलिए तुझे जम बांधकर अपने जमपुरी में ले जाएगा ऐसे सभी हरीजन कहते है। ।।८।।

१३६

।। पदराग धनाश्री ।।

ग्यान सुणे सुण चेत ज्यो रे

ग्यान सुणे सुण चेतज्यो रे ।। सिंवरोनी दीन दयाल ।।
तीन लोक इत्त ऊत्त मेरे ।। हरजी करे प्रतपाळ ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतगुरु से ज्ञान सुन सुन चेत जाओ और जो रामजी तीन लोक में सभी का प्रतीपाल करता ऐसे दिनदयाल का स्मरण करो ।।टेर।।

आज काल दिन पांच मेरे ।। सबका चलणा होय ।।
भोंदू रोवे ओर कूं रे ।। अपना सोच न कोय ।। १ ।।

आज या कल याने रिक्ता,जया,नंदा,भद्रा,पूर्णा इस पाँच तिथी में याने सोमवार से रविवार तक के सात दिनोंमें जैसे सभी जा रहे वैसे मुझे भी जाना पडेगा यह अपनी सोच नहीं करता और जो गया उसका आगे कैसा होगा इसके लिए रोता । ।।१।।

स्वारथ काजे सोच करे ।। मत सिर बांधो भार ।।
इण गेले सब जावसी रे ।। पाप पुन्न की लार ।। २ ।।

स्वार्थ याने विषय विकारोंकी सुखों की चिंता करके अपने सिरपर हरजी के गुनाहों का बोजा मत बांधो। जैसा वह गया उसी तरह सभी एक दिन जाते है और उसके साथ जो

पाप या पुण्य कर्म गए है वैसेही पाप और पुण्य कर्म सभी के साथ चलते है ।।२।।

कहाँ कहुँ इण जीव ने रे ।। माने नहीं रे लगार ।।
सोग रोग सुख दुखमे रे ।। गयो जमारो हार ।। ३ ।।

मैं मेरे मन को क्या समजाऊ यह ज्ञान की एक बात समजता नहीं। मरे हुए के पिछे की चिंता,रोग,माया के सुख,काल के दु:ख में यह अनमोल मनुष्य देह गमा रहा ।।३।।

ग्यान ध्यान हर भक्त की रे ।। केहे जुग कूं जन आण ।।
तोई मनवो ना गहे रे ।। आ सुक्रत इम्रत बाण ।। ४ ।।

हरी का सतज्ञान,सतध्यान,हरी की भक्ती जगत में संत आ आकर बताते तो भी मेरा मन हरी की भक्ति धारण नहीं करता। यह संतों की अमृतबाणी सुकृत की खाण है। ।।४।।

धाम चल्या क्या रोईये रे ।। जो घर अपणे कूं जाय ।।
के सुखदेव जिण भेजिया रे ।। जांही लियो हे बुलाय ।। ५ ।।

अपने धाम गया उसे क्या रोना। वह जिस घर से यहाँ पर रहने आया था उसी घर वापीस गया। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जिस साँई ने उसे भेजा था उसीने वापीस बुला लिया उसके लिए क्या रोना?।।५।।

१३९
|| पदराग मंगल ||

|| हंसा छाडोनी जुग को नेह ||

हंसा छाडो नि जुग को नेह ।। जक्त सूं तोडिये ।।
सतगुरां सुँ कर हेत ।। साहेब दिस जोडिये ।।१।।

अरे जीव,जगत का स्नेह तोड और साहेब मिला देनेवाले सतगुरु से प्रेम कर। ।।१।।

बिष प्याला सब छोड ।। अमीरस पीजिये ।।
तन मन दिल को साच ।। साहेब कूँ दीजिये ।।२।।

तू विषय वासना के प्याले पिना छोड और सतवैराग्य ज्ञानरुपी अमृत के प्याले भर भर पी। सतगुरु ही साहेब है यह विश्वास कर और अपना तन,मन तथा निजमन सतगुरुरुपी साहेब को दे। ।।२।।

मान हमारी बात ।। कहूं समझाय बो ।।
ओ मोसर दिन आज ।। बोहर नहींपाय बो ।।३।।

यह मेरी बात मान,मैं तुझे बहुत तरह से समजाकर कह रहा हुँ। आज साहेब पाने का अवसर आया है। यह अवसर हाथ से निकल जाने के बाद वापीस नहीं मिलेगा। ।।३।।

अब के चूक्यो डाव ।। घणो पिसतावसी ।।
लख चौरासी के माय ।। मार बोहों खावसी ।।४।।

यह डाव चुक जाने पर बहुत पछ्तावा होगा और चौरासी लाख योनी में पल-पल बहोत मार खाना पडेगा इसलिए तू मन में समजकर रामजी के भजन से लग। ।।४।।

समज समज मन माँय || भजन सूं लागीये ||
काळ भवे सिर तोय || नींद सूं जागीये ||५||

इसलिए तुम समझो और मन में समझकर भजन करने लग जाओ। अरे,तुम्हारे सिर पर काल चक्कर लगा रहा है तो तुम अज्ञानता की निद्रा से जागृत हो जाओ। ||५||

चेते क्यूँ नी गिवार || ग्यान सुण जोईये ||
क्हे सुखदेवजी तोय || जलम क्यूं खोईये ||६||

अरे मूर्ख जीव,तू सतस्वरुप ज्ञान सुन और चेत तथा मिला हुआ अमूल्य मनुष्य तन गमा मत ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है। ||६||

१५४

|| पदराग जोग धनाश्री ||

हेला दे दे संत पुकारे

हेला दे दे संत पुकारे || काळ अचानक मारे रे लो || टेर ||

संत जगत के सभी नर नारीयों को जोर दे देकर समजाते है कि,काल जैसे सभी को अचानक आके मारता वैसे तुझे भी अचानक आके मारेगा। ||टेर||

आज निरोगी तन तेरा बणीया || नेण गुदी पर आया रे ||
काम पडेग़ा रे तां दिन जम सुं || जाँ दिन खबराँ हे भाया रे लो || १ ||

आज तेरा शरीर निरोगी है,धष्ट पुष्ट है। तेरे में जवानी का जोर है। तेरे नेण गुदी पर आये है याने तेरे मन में अती मगरुरी प्रगटी है इसलिए काल अचानक मारेगा,यह समज देनेवाले संतो की बात तू मानता नहीं,बार बार उथापता परंतु जिस दिन तेरा जम से काम पडेगा तब तुझे मदद करनेवाला कौन रहेगा?||१||

आज गिणत मे कछू न आणे || मन मत वाळो होवे रे ||
ग्यान ध्यान की रत्ति नहीं माने || प्राण करेगा जम जुवारे लो || २ ||

आज तू काल से छुटकारा कर देनेवाले संतो का जरासा भी मानता नहीं और मन से मदोन्मत मस्ती में डोलता,तू संतो से सतज्ञान,ध्यान की रित समझना नहीं चाहता परंतु जब यम तेरा प्राण तेरे घट से अलग करेगा तब तेरा मदोन्मस्त मन मिटा हुवा रहेगा फिर उसके भरोसे तू क्या कर सकेगा?||२||

रे मन चेत अचेतन आंधा || तो सिर जम का झोका रे ||
ओ रंग रूप पतंग सो भाई || बोहो सहेलो सिर दोखारे लो || ३ ||

अरे जीव,चेत होशियार हो,अचेतन मत रह,आंधा मत बन। तेरे सिरपर जम की फेरियाँ लग रही। तेरा रुप और रंग पंतग के समान है। तेरे सिर पर अनेक दोष बाँधे गए है उस दोषो के अनेक दु:ख तुझे सहन करने पडेंगे||३||

काची देहे तेरी जेसी बुद बुदो || छिन पलमें फिस जावे रे ||
रे जड मूरख क्यूं नर फूले || छिन पल लाताँ खावे रे लो || ४ ||

जैसे पानी का बुदबुदा फुटने को नाजूक रहता वैसी तेरी देह है। यह तेरी देह एक ही पल मे मिट जाएगी। अरे जड मुर्ख,तू मन मे फूल मत,थोडे पलों में ही तू जम की लाता खाएगा इसकी समज रख। ।।४।।

चिंते क्यूंई ने होवे क्युंई ।। तोई मुरख नहीं जाणे रे ।।
अहुंपद लियां रे निस दिन डोले ।। बाद बिबाद ही ठाणे रे लो ।। ५ ।।

तू मन में चिंतन करता कुछ और तेरा होता कुछ फिर भी तू मुर्ख जम से काम पड़ेगा यह समजता क्यों नहीं?तू अहंम में रात-दिन डोल रहा है और काल छुडनेवाले संतों के साथ वाद विवाद कर रहा है ।।५।।

राम धणी कूं कदे हन सिंवरे ।। आन कुं दोड़ मनावे रे ।।
जाँ पल काम पडे़गा जम सूं ।। तब कहो कूण छुडावे रे लो ।। ६ ।।

राम मालिक का कभी स्मरन नहीं करता और काल के मुख में पटकनेवाले राक्षसी देवताओंको दौड दौड जाकर मनाता। जब तेरा काल से काम पड़ेगा तब तुझे काल से कौन छुडायेंगा?।।६।।

बांदेगा जम लायर थांबे ।। नरक कुंड में डारे रे ।।
जम अजरायल बोहो तज बाँका ।। नाय किसी के सारे रे लो ।। ७ ।।

तूझे जम नरककुंड में डालकर अग्नी से लाल लाल हुए खंबो से बाँधेगा। अरे,यह जम बहोत बांका है,अजरायल है,किसी के काबू में होनेवाला नहीं है। ।।७।।

जम सरीसा बेरी सिरपर ।। गाफल काँय नचीतारे ।।
क्हे सुखराम भज्या बिन सांई ।। जुग जुग व्हेला फजिता रे लो ।। ८ ।।

ऐसा बेरी जम तेरे सिरपर है,फिर गफलत में नहीं रहना चाहिए फिर भी तू निश्चिंत कैसे रह रहा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,साँई के भजन बिना युगानयुग यम तुझे मार दे देकर तेरी फजिती करेगा। ।।८।।

१५९

|| पदराग जोग धनाश्री ||

जब जम आण नगर कुं घेरे

जब जम आण नगर कुं घेरे ।। बंध करे बोहो भांती रे ।।
नव दरवाजा आणर रूंधे ।। झांक रहे सब साथी रे लो ।। टेर ।।

यम तेरे काया नगरी में तेरे जीव को घेरकर बहुत तरह से कैद करेंगे तथा काया नगरी के सभी नौ दरवाजे रोक कर अपने कैद से तेरे जीव को निकलने नहीं देगा और तेरे सभी साथियोंके सामने कैद करके ले जायेगा तब तेरे साथी देखते रहेंगे परंतु तेरे साथी यम से तुझे छुडाने के लिए कुछ नहीं कर सकेंगे ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।टेर।।

सुण मन समजर चेत सँवेरो ।। हर बिन नहीं कोई तेरो रे ।।

सरब कबीलो पासे बेठो ।। तुं मत जाणे मेरो रे लो ।। १ ।।

(अरे,संकल्प–विकल्प करनेवाले) मन,तु सुनकर,जल्दी चेत जा,समय गँवा मत। अरे,हर के अलावा,इस संसार में कोई भी तेरा नहीं है। तेरे सारे कबीले के याने परीवार के लोग, तेरे पास बैठे हुए है,परंतु तु ये मेरे है ऐसा,इन्हें मत समझ। ।।१।।

काहुँ को बळ जोर न लागे ।। बंद्यो जम पुर जावे रे।।
प्राण बाँध जंवरो ले जावे ।। काया कुं कुटंम्ब जळावे रे लो ।। २ ।।

ये पास में बैठे हुए,बेचारे भी क्या करेंगे इनका किसी का भी बल और जोर नहीं लगेगा और तु बांधा हुआ कैद होकर यमपुरी में जायेगा। तुझे छुड़ाने के लिए,इनका किसी का जोर भी नहीं लगेगा। इस प्रकार तुम्हारे प्राण को बाँधकर कैद करके यम ले जायेगा और इधर तेरे इस शरीर को तेरे परीवार के लोग,जला डालेंगे। ।। २ ।।

यां काया मांही बोहो दुःख पाडे ।। अरथ ना लागण देवे रे ।।
वाँहां सुण जमकी मार सहेला ।। लेखा तिल तिल लेवे रे लो ।। ३ ।।

इस तेरे शरीर को कोई जलायेगा,कोई गाड़ेगा इस तरह से,तेरे परीवार के लोग इस शरीर को इधर अनेक तरह से नाश करेंगे और तेरा जीव यम के घर यम की मार सहन करते रहेगा। वहाँ यम के घर यम एक–एक,तील–तील का हिसाब,तुझसे लेगा और अपराध के लिए मार देगा। ।।३।।

के सुखराम समज रे प्राणी ।। वाँ दिन को भै राखो रे ।।
जम अपर बळ काळ सीस पर ।। तां सूं डर हर भाषो रे लो ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अरे प्राणी,यह समझकर उस दिन का,मन में डर रख। अरे,यह यम बहुत अपर बल है वह अपने सिर पर काल है,इससे डरकर, हर नाम का भजन कर। ।।४।।

१९२
|| पदराग हिन्डोल ||

कपटी राम न पावे हो
अन्त काल पिस्तावे साधो ।। कपटी राम न पावे हो ।।टेर।।

राम और कपटी कौन यह समजेगे ।

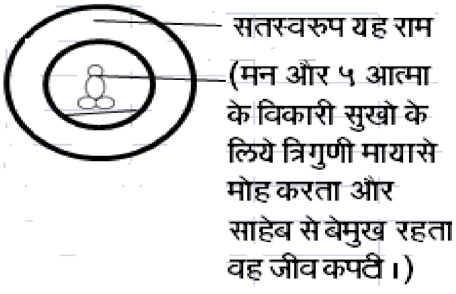

यह जीव कपटी कैसे?

गर्भ का करार–हे परमात्मा,मैं तेरी ही भक्ति करुँगा,अन्य किसी की भक्ति नहीं करुँगा। मैं मन और ५ आत्मा के विकारोंके अनुसार बिल्कुल नहीं चलुँगा। मैं मन और ५ आत्मा के विकारों के लिए विकारी त्रिगुणी माया की भक्ति कभी नहीं करुँगा। त्रिगुणी माया की भक्ती करके काल का ग्रास कभी नहीं बनूँगा। काल बलवान होगा ऐसे काम,क्रोध,कुटलाया को मारुँगा और मन,५ आत्मा को जड से अलग

|| राम नाम लो, भाग जगाओ ||

करुँगा और तुझमें आकर मिलुँगा आदि आदि ।।टेर।।

मुख पर मीठा बहू लघुताई ।। सेणो समजणो बोले हो ।। १ ।।

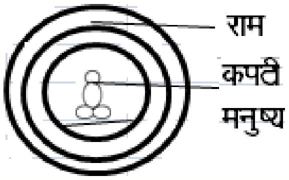

ऐसा कपटी मनुष्य साहेब याने सतगुरु के मुखपर ज्ञान की मिठी मिठी बातें करता और साहेब याने सतगुरु के साथ बडे लघुताई से रहता और बडी बडी ज्ञान की सयाना,समजवान के जैसे बातें बोलता।।१।।

दाव घाव सूं ओ ऊर भरीयो ।। साहिब कहो कांहाँ आवे हो ।। २ ।।

ऐसे कपटी मनुष्य का उर याने निजमन त्रिगुणी माया के मन और ५ आत्मा के विकारी सुखों के दाव और घाव से भरा रहता। ऐसा त्रिगुणी माया,मन और ५ आत्मा के विकारो में भिना हुवा जीव का निजमन साहेब चाहेगा तो उसके उर में साहेब कैसे आएगा?।।२।।

काम क्रोध कुटलायाँ केती ।। सोचत ही दिन जावे हो ।। ३ ।।

ऐसे कपटी जीव के मन में काम,क्रोध तथा अनेक प्रकार की कुटीलता भरी है। उस विकारी मन के वश होकर जीव इन काम,क्रोध और कुटीलता के विचार सोचने सोचने में रात-दिन व्यतीत करता है और साहेब पाने की चाहना करता। ।।३।।

ऊजळ कपड़ा बोहो बिध राखे ।। ज्ञान अरथ सुण ल्यावे हो ।। ४ ।।

ऐसा कपटी मनुष्य भारी सतज्ञानी दिखे मतलब सतज्ञान को शोभायमान दिखे ऐसे नाना विधी से उजले भेष पहन रखता और जगत सतज्ञान से आकर्षित होवे ऐसे संतोंके दाखले दे देकर जगत को ज्ञान सुनाता। ।।४।।

अंतर मेला नांही भरोसो ।। फिर फिर आन मनावे हो ।। ५ ।।

ऐसा कपटी मनुष्य साहेब के अनेक दाखले जगत को ला ला सुनाता परंतु इस कपटी का निजमन वासनिक त्रिगुणी माया के तथा मन और ५ आत्मा के मैली वासना में लिपटा हुआ रहता इसलिए ऐसे कपटी मनुष्य का साहेब पर रोसा नहीं आता और साहेब पर भरोसा न आने के कारण भेरु,क्षेत्रपाल,बिजासन,मुंजोबा,खंडोबा आदि ऐसे पापकर्ते देवी देवताओं को बार-बार विकारी सुखों के लिए मनाता। ।।५।।

फळ कारण ले सेवे प्रभू को ।। प्रममोख कूं चावे हो ।। ६ ।।

ऐसा कपटी मनुष्य मन और ५ आत्मा के विकारी फलो के लिए प्रभु की याने सतगुरु की सेवा याने भक्ति करता। सतगुरु की याने प्रभु की विकारी फलो के लिए भक्ति करके सतगुरु से परममोक्ष मिले यह चाहना रखता ऐसा प्रभु के साथ कपट खेलता। ।।६।।

क्हे सुखराम राम बिन आसा ।। सो सब कपट कहावे हो ।। ७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,सभी जगत के लोगों को बता रहे है की,रामजी छोड्कर विकारी मन और ५ आत्मा,विकारी त्रिगुणी माया तथा होणकाल पारब्रम्ह की कोई भी आसा रखता,वह उस प्राणी का साहेब के साथ कपट है और ऐसा कपटी,राम याने साहेब कभी नहीं पायेगा। ।।७।।

२१६
|| पदराग बिलावल ||

मे तुज बूझू रे प्राणीया

मे तुज बूझू रे प्राणीया || सन मुख कद व्हेलो ||
जिण तो कूं पेदा कीयो || तन मन कब देलो || टेर ||

अरे प्राणी,जिसने तुझे पैदा किया उसके सनमुख कब होगा?उसको तेरा तन,मन कब देगा?||टेर||

काळा सूं धोळा हुवा || सिर डिग मीग धूजे ||
नेणा सूझे धूंधळो || तोई भक्त न बूजे || १ ||

तेरे काले बाल सफेद हो गए। तेरी गर्दन झामग झामग धुज रही। आँखों से धुंधला दिख रहा,साफ नजर नहीं आ रहा फिर भी जिसने तुझे पैदा किया उसकी भक्ति संतों को नहीं पुछ रहा। ||१||

सर्वण सब्द न सांभळे || इंद्र्या सब थाकी ||
तोई हिडक्यो धनको || सिंवरे नहि डाकी || २ ||

कानो से सुनाई नहीं देता इसप्रकार सभी ज्ञानेंद्रिय और कर्मेंद्रिय थक गए फिर भी पागल कुत्तो के समान धन के लिए दौड रहा और जिसने पैदा किया उसका स्मरण नहीं करता। ||२||

मुख लाळाँ नासा झरे || पगसो पड़े नहि ठावा ||
तो बी हर सिंवरे नहीं|| हांके नित दावा || ३ ||

मुखसे लाळ गिर रही,नाक से पानी झड रहा,पैर ठिकाने पर नहीं पड रहे फिर भी हरी का स्मरण नहीं करता,उलटी माया पाने की नित-नित बातें हाकता। ||३||

जात न्यात घर गांव का || कोई बात न माने ||
के सुखदेव तोई जक्क रे || करमा दिस ताणे || ४ ||

जात के,न्यात के,घर के,गाँव के लोग एक भी तेरी बात मानते नहीं?फिरभी तू काल के मुख में रखनेवाले कर्मो के तरफ ही ताणता,ऐसा तू जक्क याने मुढ है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे। ||४||

२२१
|| पदराग सोरठ ||

मन रे गाफल चेत संवेरो

मन रे गाफल चेत संवेरो ||
ज्याहाँ चालो त्याहाँ करम न लागे || काळ न घाले घेरो || टेर ||

अरे मन,माया मोह और जवानी मे गाफील मत रह। विना विलंब जल्दी चेत जा और ऐसी जगह चल जहाँ कर्म नहीं लगते। तुझे कर्म नहीं लगेंगे तो दु:ख देने के लिए तेरे पर काल घेरा भी नहीं डालेगा। ||टेर||

जे लागी तो चेत सभाग्या || सोयर क्युँ नर हारे ||
अमर पुरूष मुगत को दाता || वाँ कूं काय बिसारे || १ ||

अगर तुझे यहाँ कर्म नहीं लगेंगे,काल घेरा नहीं डालेगा ऐसे देश की तलब लगी है तो अरे भाग्यवान जीव,चेत जा और अमर होने का भाग्य बना ले। ३ लोक १४ भवन में रखनेवाली अन्य भक्तियाँ,माया मोह और जवानी के निंद में सो मत। मुश्किल से मिला हुआ यह मनुष्य देह हार मत। अमर पुरुष जो काल से मुक्ति मिला देनेवाला दाता है उसे जरासा भी भुल मत। उसका रात–दिन स्मरण कर। ||१||

जे सूता सो खरा बिगुता || जम के हात बिकाया ||
चवदे तीनुं लोक बिचाळे || काळ बीण सब खाया || २ ||

जो अन्य भक्ति,मोह,ममता और जवानी में सोया है,रामभजन नहीं कर रहा है उसने अपने मनुष्य देह का बिघाडा किया है और वह जम के हाथ बिके गया है। उनको काल तिन लोक चौदह भवन में खोज खोजकर खाता इसलिए तु तेरा चित इस जगत के अन्य भक्तियों में,मोह ममता में और देह के जवानी मे उलझा मत इनमें चित डालने से तुझे नित्य–नित्य काल के दु:ख दिए जाएँगे। ||२||

क्युँ चित खोय रहयो इण जुग में || ज्याहाँ दोजख नित दीजे ||
के सुखराम समझ मन मेरा || भलो आप को कीजे || ३ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जिससे अमरपद न मिलते नित्य नर्क के दु:ख पडते ऐसे बातों में हे मन,क्यों चित लगा रहा है?अरे मन,तु समज और अमरलोक पाने का अपना भला कर ले। ||३||

२२५
|| पदराग कल्याण ||

मन रे सिमर सिमर हल सांई
मन रे सिमर सिमर हल सांई ||
राम भजण बिन सांसा जावे || सो सब रेत मिलाई || टेर ||

अरे मन,अरे जीव,राम नामके स्मरण में अभितक जो अनमोल साँसे नहीं लगी वे सभी साँसे धुल में मिल गई है। आगे भी जो अनमोल साँसे रामभजन में नहीं लगेगी वे सभी साँसे धुल में ही मिलेंगे। अरे मन,अरे जीव,साँई ने तुझे ७७,७६,००,०००अनमोल साँसे अमरलोक में पहुँचने के लिए दिए। ये तेरी अनमोल साँसे राम भजन के बिना फिजुल के बातों मे लग रहे?तू जो जो साँस राम भजन छोड के अन्य बेकाम बातो में लगा रहा है वे सब साँसे धूल में मिल रही है इसलिए अरे तू मन,तू जीव,राम स्मरण की घाई कर जल्दी जल्दी कर और साँई ने दिए हुए सभी साँस बेकाम न जाने देते राम भजन को लगा। |टेर|

राम भजन की ढील करे रे || कर्मा की ताकीदी ||
सत्त संगत तज जाय हतायां || फिट लाणत तोय गीदी || १ ||

अरे जीव,राम भजन की ढिलाई करता है और कर्म करने के ताकीदी याने अति घाई करता है तथा सतसंगत छोडकर जहाँ फिजुल गप्पे हो रही है उस बैठक में दौड दौड जाता है। अरे तेरे इस नीच स्वभाव को धिक्कार है। ।।१।।

जुग सूं हेत साध सूं फीको ।। हर तज आन मनावे ।।
सतबात की अवग्या कर के ।। बिषे बात मन भावे ।। २ ।।

अरे जीव,जगत के लोगोंसे प्रिती करता है और साधू से मन फिका रखता है। हर को छोडकर अन्य देवोंकी भक्ति करता हैं। सत विज्ञान के बात की अवज्ञा करता है और विषयोंकी बातें मन को अच्छी लगती हैं। ।।२।।

सुय रहे के झोड चलावे ।। कांय मुन गहे मन माही ।।
के सुखराम ध्रग मन तो ने ।। राम रटे क्यूं नाही ।। ३ ।।

सतसंगत में गया तो वहाँ सो जाता था,जगा रहा तो संतो के साथ बेफिजुल बातें कर झोड करता है और सत चर्चा न करते मन से ही मौन धारण करता है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज मन को कहते है कि,अरे मन,तुझे धिक्कार है,तु ऐसे अनमोल साँसे क्यों गमाता?तु हर साँस में राम नाम क्यों नहीं रटता?।।३।।

२२८

।। पदराग बिहगडो ।।

मन रे मत फूले मुढ गिवांरा
मन रे मत फूले मुढ गिंवारा ।।
तो सिर काळ खाय मूर्डाटी ।। दुस्मण अखत अपारा ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज मन को कहते है की,अरे मुर्ख मन,अरे गवार मन,तु मद मस्ती में फुल मत। तेरे सिर उपर कथे नहीं जाता तथा जिसका पार नहीं आता ऐसा काल दुश्मन तुझे काट काटकर खाने के लिए बिना विश्राम चक्कर काट रहा है। ।।टेर।।

च्यार दिना की जोर जवानी ।। अंत बुढापो आसी ।।
डिग मिग नाड नेण नहीं सूझे ।। लोक करेगा हांसी ।।१।।

अरे मन,यह तेरी जवानी और शरीर की ताकद चार दिन याने चंद दिनोंकी है। तुझे जल्दी ही बुढापा आएगा तब जवानी का जोर खतम हो जाएगा। शरीर की ताकद खतम हो जाएगी,तब तेरी गर्दन डगमग-डगमग हिलने लगेगी,तब लोग तेरी हँसी उडायेंगे। बुढापेमें तेरी आँखों की नजर कम होगी,रहेगा कुछ और दिखेगा कुछ ऐसी आँखों की स्थिती बनेगी तब अंधा आया ऐसा कहकर तुझे हँसेंगे। ।।१।।

यांहाँ अब ही अवरां के सारे ।। छिन पलमे कुमळावे ।।
इण बळ कोण धणी बावळा ।। गरभ अंहु क्यूं लावे ।। २ ।।

यही अभी ही इसी प्राप्त देह में तु दुसरो के आसरे हो गया। तु किसी के लकडी पकडे बिना पेशाब या शौच करने जा नहीं सकता। शरीर के इस कमजोर दशा कारण छिन-छिन में,

पल–पल में दु:ख से उदास हो जाता। अरे मन,तु ऐसे दुबले बल का मालीक है। अरे मन ,पगले के समान गर्व और अहंकार क्यों लाता है। ।।२।।

पांचू पिसण पचीसूं बेरी ।। तन अेक बसे माही ।।
तब लग बोलर काय बिगूचे ।। नाव पडी दे : माही ।। ३ ।।

ये पाँचो इंद्रीयोंके विषय शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध तेरे दुश्मन है और ये पच्चीस प्रकृती ये सभी तेरे बेरी है। ये पाँच विषय इंद्रिये और पच्चीस विषय प्रकृतियाँ ऐसे सभी तेरे घट में खुले आम निवास करते है। तब तक भी तु क्या करता है?जब तक डोह में(भंवरे मे)नाव है तब तक यह नाव कब डुबेगी इसका जरासा भी भरोसा नहीं रहता। अरे मन,तु बोलकर क्या दिखाता है? ।।३।।

गढपर उलट चडयो नहीं ऊंचो ।। सायब नाय रिजाया ।।
के सुखराम अलप सुख जुग का ।। यामे क्या सुख पाया ।। ४ ।।

जब तक तु बंकनाल के रास्ते से उलटकर गढ के उपर चढकर साहेब को रिजाता नहीं तब तक तु महासुख पाता नहीं। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज मन को कहते है की,इस संसार के गिने मिने सुख में क्या सुख पा रहा है। इस संसार के सुख में सुख तो अल्प है और काल के दु:ख अगणीत है यह तु समज और साहेब को रिजाने की विधी धारण कर। ।।४।।

२३१
।। पदराग जोग धनाश्री ।।

मात पिता सुत बंधू तेरा

मात पिता सुत बंधू तेरा ।। सुसरो सासू नारी बे ।।
अंतकाळ में अेकौ नहीं संगी ।। सब स्वारथ की यारी बे ।। टेर ।।

माता,पिता,सुत,बंधु,सुसरा,सासु,नारी जब शरीर छोड्ने का अंत समय आता और यमदुत घेर के जुलुम करते ले जाता तब ये कोई भी तेरे साथ अपना शरीर त्यागकर तुझे अकेले जुलुम में नहीं रखना उन जुलुमोंमे साथ देना करके साथमे चलने की जरासी भी तयारी नहीं रखते। ऐसे स्वार्थ स्वभाव के सभी माता,पिता,सुत,बंधु,सुसरा,सासु,नारी को सुख मिल रहे थे तब तक हरपल प्रिती कर रहे थे। जैसे ही यमदुत का तुझे दु:ख भोगवाना उन्हें दिखा सभी तेरे से दुर हट गए वे तेरे साथ तेरे दु:ख में सामिल होनेकी जरुरत भुल गए। ।।टेर।।

सुण मन समझर राम पुकारो ।। सतगुरू सरणो धारी बे ।।
अन धन धिणो संपत सारी ।। अेक भक्त बिना भिकीयारी बे ।। १ ।।

इसलिए अरे तु मन,तु प्राणी,जो इस काल के दु:ख से निकाल देगा ऐसे रामजी कि पुकार कर। यह रामजी सतगुरु के शरणा में मिलता है। यह रामजी तेरे पुकार ने पर तेरे साथ आएगा और हर समय तेरे साथ रहेगा और काल का बाल इतना भी कष्ट पड्ने नहीं देगा

और तुझे बडे सुख संपत्तीके देस ले जाएगा। अरे जीव,तेरे पास अभी अनाज,धन,सुख-संपदा बहुत है परंतु ये धन,अनाज,सुख-संपदा तेरा शरीर छुटते ही यही रह जाएँगे तेरे साथ नहीं चल पाएँगे यह तु समज। तुझे यम बिना धन,बिना अनाज,बिना सुख संपदा ऐसा भिखारी बनवाकर तुझे भुखे,प्यासे रखते मार देगा हर दुःख,यातना देगा और भी दुःख भोगवाने के लिए अपने यमद्वार ले जाएँगे अगर तु रामजी की भक्ति कर रामजी को पा लेता तो तुझे यम नहीं घेर पाते थे और तुझे यम न ले जाते रामजी लेने आते और जो आज अनाज,धन,संपदा तेरे पास है उससे अनंत गुना सुख संपदा रामजी अपने देश में तुझे बक्षीस में देते थे। ॥१॥

खवास पास संग चाकर चेरी ॥ हेत करे घर जावे बे ॥
काम पडेगो जब ध्रमराय सें ॥ आडो अेक नहींआवे बे ॥ २ ॥

आज तेरे साथ खवास,चाकर,चेरी याने आज्ञाकारी नौकर,चाकर बहोत है। तेरे से सभी बहोत प्रिती करते। ये सभी तेरा हर शब्द तोल मोलकर तुझे सुख देने के लिए तेरी चाकरी बजाते। काम समय पर खतम होने के बाद घर पर जाते और घर जाने पर भी उनका मन उनके संसार से भी जादा तेरे में रमता परंतु जब तेरा धरमराय के साथ जाने का काम पड्ता तब ये तेरेसे प्रित रखनेवाले नौकर चाकर एक भी धरमराय के आडे नहीं आते मतलब मेरे मालिक बहुत अच्छे है हमें उनसे बहुत प्रिती है उनके बजाय हम चलते ऐसा कोई नहीं कहता इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ये नौकर,चाकर तुझसे उन्हें जब तक धन मिल रहा था तब तक ही संग थे तुझ पर दुःख पड्ते ही मतलब तेरा धन तेरेसे अलग होतेही मतलब तेरे साथ न चलते दिखतेही इन प्रेम करनेवाले नौकर चाकरोंने भी संग त्याग दिया इसलिए तू रामजी की भक्ति कर और साथ देनेवाला रामजी प्राप्त कर । ॥२॥

ना कोई तेरो तूं ना काहु को ॥ झुटे चित्त नहीं दिजे बे ॥
क्हे सुखराम समझ रे प्राणी ॥ हर भज बिलम न किजे बे ॥ ३ ॥

अरे प्राणी, माता, पिता, पुत्र, पुत्री,भाई-बंधु,सासु,सुसरा,पत्नी,धन,अनाज,सुख-संपदा, नौकर,चाकर ये कोई तेरे नहीं है और तू भी इनका नहीं है। अगर तू इनका रहता तो तू तो इनको अकेला छोड्कर नहीं जाता इसलिए तेरा चित्त रामजी में दे। जो तेरे ही है या तू जिसका नहीं है ऐसे झुठेमें चित्त मत लगा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, अरे प्राणी,यह माता,पिता,पुत्र,पुत्री,भाई बंधु,सासु,सुसरा,पत्नी,धन,अनाज,सुख संपदा, नौकर,चाकर ये तेरे नहीं है यह ज्ञान से समज और जो तेरा है ऐसे हर को भजने में जरासा भी विलंब मत कर और भजकर उसे घट में प्रगट कर ले। ॥३॥

२४५

॥ पदराग केदारा ॥

नहि रे असो लगन दूजो कोय

नहि रे असो लगन दूजो कोय ।।
लख चोरांसी ओर सावां ।। ज्याँ मे ब्याव न होय ।। टेर ।।

ब्याव करने की तिथियों मे ब्याव होते है। लगन तिथी नहीं निकलती तो विवाह होते नहीं ऐसे ही मनुष्य देही के लग्न तिथी में परमात्मा के साथ आत्मा नारी का विवाह होता। यह आत्मा नारी का विवाह चौरासी लाख योनी के देहों मे कभी नहीं होता।।टेर।।

पारब्रम्ह सो भेजिया हो ।। भेद नीराळो संभाय ।।
धिया प्रणो ब्रम्ह सुन्न मे ।। बगत टाळीयो जाय ।। १ ।।

सतस्वरुप पारब्रम्ह ने माया में अटकने से न्यारा मोक्ष में जाने का भेद देकर मृत्यु लोक में मनुष्य देह में भेजा था। वह भेद सतज्ञान से समजकर मनुष्य देह पाए हुए आत्मा ने ब्रम्ह शुन्य में सतस्वरुप परमात्मा के साथ विवाह करना चाहिए। यह मनुष्य देह का अवसर खतम होने के पश्चात चौरासी लाख योनियों के अवसरोंमे मोक्ष पाने का काम नहीं होता। ।।१।।

सतगुरा हेलो पाडियो हो ।। सुण लीज्यो नर नार ।।
अब के मोसर चूक गयां रे ।। कदे न परण न हार ।। २ ।।

सतगुरु सतज्ञान से सभी नर–नारी को भाँती–भाँती से जोर दे देकर समजा रहे की,जैसे लगन सांवा निकल जाने पर कितनी भी चाहत की,कोशिश की,तो भी कभी भी लग्न नहीं होगा। ऐसेही यह मानव तन का अवसर चुक जाने पर चौरासी लाख योनि में मोक्ष पाने की कितनी भी चाहत की तो भी मोक्ष नहीं होता। ।।२।।

जुग जुग रेसो कंवारडारे ।। पडसो अगत के माय ।।
ममता तृष्णा अंत सतासी ।। त्रपत हो सो नाय ।। ३ ।।

जैसे लगन मुहुर्त टल जाने से मनुष्य को सदा के लिए कंवारा रहना पड्ता फिर उसे ग्रहस्थी सुख नहीं मिल पाते। उसे ग्रहस्थी सुखों की चाहना भयंकर सताते रहती। ग्रहस्थी सुखों की अतृप्ती में मन उसे सुखों के लिए भटकाते रहता फिर भी विवाह न होने कारण सुखोंके अतृप्ती में गुजरते रहना पड्ता। विवाह बिना शरीर का अंत हो जाता,प्राण घट से निकल जाता और वह प्राण भूत के अगती योनि में जाकर सुखों के लिए जीव को भटकाते रहता। भटकने पश्चात भी वहाँ उसे वे सुख नहीं मिलते। इसीप्रकार आत्मा ने परमात्मा से विवाह नहीं किया तो मोक्ष के तृप्त सुख नहीं मिलते। चौरासी लाख योनि के दु:खों के अगती योनियों में पड्ना पड्ता। ममता,तृष्णा महासुखों के लिए तरसाते रहती और जीव महासुखों के तृप्त सुख न पाने के कारण अतृप्ती के साथ चौरासी लाख योनि के दु:खोंमें गुजरते रहता। ।।३।।

के सुखदेव कोई ब्यावज मांडो ।। चावे सो लो मुज पास ।।
ब्रम्ह लोक मे फेरा पाडू ।। बोहोर न रेहे जुग आस ।। ४ ।।

इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ,मैंने सभी नर नारियों के लिए आत्मा का ब्रम्हशुन्य में सतस्वरुप ब्रम्ह के साथ विवाह कर देने की व्यवस्था मांडी है। जिसे जिसे विवाह करने की चाहणा है वे मेरे शरणे आओ। मैं ब्रम्ह में सतस्वरुप ब्रम्ह के साथ तुम्हारे फेरे करा दुँगा फिर तुम कभी चौरासी लाख योनि में नहीं पडोगे। ।।४।।

२७१

।। पदराग सोरठ ।।

पांडे से सब मधम कहावे

पांडे से सब मधम कहावे ।।

तांबा भखे पीवे ले नासा ।। सो सट प्रळे जावे ।। टेर ।।

अरे पंडितो,तंबाखू खाना,चिलम पिना,नाक से नस सुँघना यह सब अती पाप कर्म करता है। अरे मुर्ख,ऐसे कर्म करने से जीव नरक में पडता। ।।टेर।।

कंद मुळ ऋषां खिण खाया ।। औरत बी संग कीवी ।।

चोरी फेर करी रिष संता ।। तांबा किणी अन पीवी ।। १ ।।

बडे बडे ऋषियों ने कंदमुल खोद खोद कर खाये स्त्रियों का संग किया,चोरियाँ की परंतु तंबाखू किसीने भी खाया,पीया,सुँघी नहीं।।१।।

राम किसन जुग राज सो कीया ।। घर धरणी सुण राखी ।।

बांध क्रोध जीव खल मार्‍या ।। तांबा किणी यन चाखी ।। २ ।।

राम,कृष्ण अवतारों ने राज किया। घर में औरते रखी। क्रोध में आकर जीवों का संहार किया परंतु तंबाखू किसी ने नहीं चाखी। ।।२।।

माटी भकी झूट सो बोल्या ।। दया हिण भी कुहाया ।।

केहे सुखराम इसा क्रम कीया ।। पिण तांबा पीवी नहीं भाया ।। ३ ।।

इन्होंने मांस भक्षण किया,झुठ भी बोले,दयाहिन होकर निर्दयता भी की ऐसे ऐसे कर्म किए परंतु तंबाखू किसीने भी खाया नहीं,पीया नहीं,सुँघी नहीं ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते। ।।३।।

२८५

।। पदराग धनाश्री ।।

प्राणी क्युँ हर बिसर्‍यो रे

प्राणी क्युँ हर बिसर्‍यो रे ।। तूं देखेनी ग्यान बिचार ।।

किणी अेक सुक्रत पावियो रे ।। ओ मानव तन अवतार ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अरे प्राणी,जिस रामजी ने तुझे मनुष्य अवतार दिया ऐसे रामजी को तु क्यों भुल गया?तु सतज्ञान से बिचार कर की तुझे तेरे कोई भारी सुकृत के कारण मनुष्य देह मिला है। इस मनुष्य देह को ३ लोक १४ भवन के ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,इंद्र आदि समान सभी देवता बडा अवतार मानते है ऐसा मनुष्य अवतार रामजी के बडी कृपा से तुझे मिला है। ।।टेर।।

जिण तोकु पेदा कियो रे ।। नख चख सकळ बणाय ।।
ग्रभवास मे रछया किवी रे ।। रिजक पूवायो हे लाय ।। १ ।।

जिस रामजी ने तुझे पैदा किया है उसे भुल मत,अरे प्राणी,उस रामजी ने तुझे सतस्वरुपी संत दर्शन के लिए आँखे बना दी। सतज्ञान सुनने के लिए कान बना दिए। सतगुरु दर्शन और सतसंगत मे जाने के लिए पैर बना दिए। सतज्ञान का समजकर बिचार करने के लिए बुध्दी बना दी,ऐसे ऐसे काल से मुक्त करानेवाले,सतज्ञान को समजने के लिए तुझे नख से लेकर चखतक अनेक सभी चिजे बना दी। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,यह मनुष्य तन नौ महिने तक अति कठिन गर्भ के विधी से बनता है। इसप्रकार तुझे भी तेरा मनुष्य तन घडने के लिए ऐसे कठिन विधी में रखा गया था तब गर्भवास के अनेक प्रकार के ताव से तेरे मनुष्य तन को घडा ने की प्रकिया में कच्ची मौत सरीखा धोका न होवे इसलिए तेरी उस रामजी ने गर्भवास में जतन कर रक्षा की। पुर्ण मनुष्य तन बन पाने के लिए तेरे तन में ताव सहने की ताकद बनी रहनी चाहिए इसलिए तुझे तेरे मन को भाँते ऐसे ऐसे शक्ति वर्धक खाने-पिने के पदार्थ पहुँचाए परंतु तु ऐसा निकला की ऐसे दयालु रामजी को भुल गया है। ।।१।।

सकळ पसारो कारबोरे ।। काचो जुग बूहार ।।
तुं माया में रच रहयो रे ।। क्या चलसी तोय लार ।। २ ।।

तु हर छोड के झुठे त्रिगुणी मायावी देवी-देवताओंमें और कुटुंब परिवार,पुत्र,पत्नी,धन,राज आदि माया में रच मचकर मगन हो गया है। ये सारा देवी-देवताओंका पसारा,जगत और कुटुंब परिवार का व्यवहार तुझे काल से छुड्वाने के लिए झुठा है,कच्चा है मजबुत नहीं है। तेरा अंतीम समय आने पर ये सभी देवी-देवता और कुटुंब परिवार,स्त्री,पुत्र,धन आदि में से एक भी साथ नहीं चलेंगे ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हर प्राणी को कह रहे है। ।।२।।

आज काल दिन सात मेरे ।। उठ चलेगो जोय ।।
चवदा तीनू लोक मेरे ।। तने राख सके नहीं कोय ।। ३ ।।

तुझे आज काल में मतलब सोमवार से रविवार तक के कोई भी वार को काल के साथ उठकर जाना पडेगा मतलब सात वार से अलग नया वार तो उठ जाने के लिए कोई उगेगा नहीं। जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी कहते है की,प्राणी को ३ लोक १४ भवन में हर छोडकर काल से बचा सकेगा ऐसा कोई देवता पराक्रमी नहीं है और तेरे मनुष्य देह से तूने भी हर छोडकर अन्य देवताओंकी ही भक्ति की है फिर वे देवता तुझे काल के दु:ख से बचाके कैसे रख सकेंगे?।।३।।

मिनषा देहे कीं खाटवा रे ।। ज्हाँ तहाँ खपटे खाय ।।
के सुखदेव पिस्तावसी रे ।। तूं समज सूळज हर गाय ।। ४ ।।

अरे प्राणी,यह मनुष्य देह छुट जाने पर काल तुने किए हुए कर्मो के अनुसार महासंकट के योनि में डालते जाएगा वहाँ तुझे अति दु:ख भोगना पड़ेगा। दु:ख भोगे नहीं जाने पर इन दु:खों से निकाल देनेवाला और महासुख में पहुँचानेवाला मनुष्य देह याद आएगा और हाथ से गमाया इसका तुझे पल–पल में पस्तावा आएगा इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज प्राणी को कहते है की,तू आजही सतज्ञान से समज और सुलझ इन सभी देवताओंकी भक्तियाँ,और कुटुंब परिवार का मोह त्याग तुझे काल से छुड्वाकर सुख में डालेंगे ऐसे हर को गा मतलब हर का भजन कर। ||४||

२८८

|| पदराग मारू ||

प्राणीयां काय तूं सुतो रे

प्राणीयां काय तूं सुतो रे || थारो करेनी घर को सूल || टेर ||

अरे प्राणी,मोह माया के काल के झुठे संसार में क्यों सोया है?तू तेरे आनंद घर की तजबीज कर ||टेर||

आज घडी पल पोर मे रे || ओ जुग जासी छाड ||
सेण हे तुं तेरा सगळा रे || करसी काडो काड || १ ||

तुझे पल में,घडी में या पोहोर में यह जगत छोड्ना पड़ेगा। अभी घर में जो तेरे हितेषी है वही हितेषी तेरा यह जगत त्यागने पर घर से जल्दी निकालो,जल्दी निकालो ऐसा बोलेंगे वैसा करेंगे फिर तू किस घर में रहेगा?इसलिए तू बिना विलंब करते अपने आनंद घर की तजबीज कर। ||१||

आठ पोर चोसट घड़ी रे || काळ भंवे सिर तोय ||
रे मुरख प्राणी मेरी सुण || तो कूं सोच न कोय || २ ||

यह काल आठ प्रहर चौसट घडी तेरे सिरपर तुझे तेरे घट से निकालने के लिए चक्कर लगा रहा है। अरे मुरख प्राणी,मेरी सुन,इस घट से निकालने के बाद तू किस घरमें रहने जाएगा?इसकी चिंता कर,बिना चिंता मत रह। ||२||

हाथ मसळ युंही जावसो रे || लार चले कुछ नाय ||
के सुखदेव जी सांभळो रे || जनम गमावे काय || ३ ||

जब घर त्यागेगा तब साथ में घर का एक भी प्राणी या एक भी वस्तु नहीं चलेगी। तू अकेला हाथ मलते जाएगा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सभी नर–नारी सुनो,इस नर जन्म से आनंद घर मिल सकता वह तुम हाथ से क्यों जाने देते हो? ||३||

२९०

|| पदराग केदारा ||

प्राणीया रे समज सिंमरो राम

प्राणीया रे समज सिंमरो राम ||

देख बिचार समज कर दील मे || हरि बिन झूठा काम || टेर ||

अरे प्राणी,दिल में सत्तज्ञाने समज और बिचार कर। हरी के स्मरण बिना तू यहाँ से उठकर काल के देश में जाएगा और वहाँ किए हुए कर्मो के बहोत धक्के खाएगा। हरी के स्मरण करने के बिना जितनी भी तू क्रिया कर्म करता है वे सभी काल से मुक्त होने के लिए झुठे काम है। ।।टेर।।

सुत्त बित्त सेंग धऱ्या रहे लारे ।। ऊठ अकेलो जाय ।।
कीया करम चलेगा साथे ।। धका बोत बिध खाय ।। १ ।।

तेरी पत्नी,पुत्र,धन यह सभी जगह के जगह धरे रह जाएँगे। इनको छोड्कर तुझे अकेले ही जाना पड्रेगा। ये पुत्र,पत्नी,धन ये कोई लेशमात्र भी तेरे संग नहींचल पाएँगे। उलटे पत्नी, पुत्र,धन के लिए किए हुए सभी निच कर्म तेरे साथ आगे आगे चलेंगे। उन कर्मो के कारण काल के अनेक धक्के तुझे मिलेंगे इसलिए तू समज और काल से मुक्त करानेवाले रामजी का स्मरण कर। उसके स्मरण सिवा जो भी कुल परिवार के मोह ममता के कारण कर्म करता है वे सभी झुठे काम है। ।।१।।

कमर बांध्या बेठो हे पंथ में ।। चालो चालो होय ।।
काळ सिराणे अेम खड्रो हे ।। ज्यूं संग छाया जोय ।। २ ।।

तू कमर बांधकर काल के द्वार उठकर चलने के रास्तें मे बिचो बिच बैठा है। तेरे जन्मने के दिन दुर जा रहे और मरने के याने काल के देश जाने के दिन नजदीक आ रहे। तुझे राम भजन करने के लिए मिले हुए साँस दिन पर दिन घट रहे। जैसे हर किसी के साथ छाया साथ में रहती,कभी पिछा नहीं छोड्ती वैसे तुझे ले जाने के लिए तेरे सिर पर जम खडे है,यह समज दिल में और विचार कर,छाया के समान सिर पर बैठे हुए काल को मारने के लिए रामजी का स्मरण कर। ।।२।।

तेरा तो डेरा जंगळ माही ।। ता मे फेर न कोय ।।
बिसवा बीस ईकीस चालणा ।। रेणा निमष न होय ।। ३ ।।

जिस तरह जंगल मे हिंस्त्र प्राणी रहते और वे कभी भी प्राणी को मार कर खा डालते उसीप्रकार यह हिंसक काल तुझे कभी भी तेरे मनुष्य देह से निकालकर महादु:ख के ८४ लाख योनी मे डालेगा। गुरु महाराज कहते ,इसलिए तू समझ और हरी का स्मरणकर। जैसे कोई मनुष्य घने जंगल में जाता। उस घने जंगल में खुंखार प्राणीयों से घेरा हुआ अपना प्राण बचाने के लिए कोई साधन नहीं रहता इसकारण उसे कभी ना कभी कोई ना कोई प्राणी खा जाता ऐसे ही यह माया का देश आदि से ही काल का जंगल है। इसमें जरासा भी फेर फार मत समज सोलह आने नहीं सत्रह आने जाना पडेगा यह समज। यह अमर लोक के समान प्राणी को रखनेवाला देश नहीं है। काल कभी भी खा जाता फिर पलभर के लिए भी यहाँ नहीं रुकते आता इसलिए तु काल खाने के पहले रामजी का स्मरण कर। रामनाम लेकर काळ को मार और अमर लोक चल जहाँ तुझे काल कभी नहीं

खाएगा। ।।३।।

ओर न तो कूं कछुहन दीसे ।। ओ जुग जातो जोय ।।
के सुखदेव कर हात रीता ।। ऊठ चले सब लोय ।। ४ ।।

अरे प्राणी,तुझे तेरा यहाँ से उठकर जाना जरासा भी दिखता नहीं। तू सत्तज्ञान से समज । यह सभी जगत के लोग तेरे ही आँखों के सामने अकेले अकेले उठकर जा रहे। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी प्राणीयों को कहते है की,ये सभी प्राणी बिना रामजी पाए खाली हाथ उठकर अकेले अकेले जा रहे और काल के धक्के खा रहे। यह काल के धक्के तुझे नहीं पडे इसलिए तू ज्ञान से विचार कर के समजकर रामजी का स्मरण कर ।।४।।

३०४

|| पदराग धनु प्रभाति ||

सब भ्रम छाड़ दईजे रे

सब भ्रम छाड़ दईजे रे ।। न केवळ नाव लहीजे रे ।। टेर ।।

ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि का ज्ञान,ध्यान,करणियाँ सभी भ्रम है। इन सभी भ्रमों को त्याग दे और निकेवल राम जिसमें रजो,सतो,तमो माया नहीं और काल नहीं है उसका नाम ले। ।।टेर।।

हरि कूं अंतर गावो रे ।। भले सुण जनम न आवो रे ।। १ ।।

हरी को अंतर मे गा,उसे प्राप्त कर और जन्म मरण से रहित हो याने फिर से तीन लोक मे जन्म में आ मत। ।।१।।

हरि कूं समजर गावो रे ।। मती वो जनम गमावो रे ।। २ ।।

हरी सुख का दाता है और दु:ख का हरता है यह समज। उसे तीन लोक के सभी देहो में सिर्फ मनुष्य देह से पाते आता इसलिए हरी को गा और उसे घट में प्राप्त कर ले और अपना आवागमन मिटा ले मतलब अपना मनुष्य जन्म झुठा गमा मत । ।।२।।

आयोडो मोसर जावे रे ।। हर कूं काय न गावे रे ।। ३ ।।

यह पाया हुआ अनमोल मनुष्य तन का औसर साँस-साँस से कम भी होते जा रहा है फिर भी तु हरी को क्यों नहीं गा रहा है? ।।३।।

भजन बिना दु:ख पासी रे ।। भुगते लख चोरासी रे ।। ४ ।।

हरी के भजन बिना चौरासी लाख योनी के भारी दु:ख भोगने पड़ेगे। ।।४।।

राम भजन को साजा रे ।। बंचत हे सुर राजा रे ।। ५ ।।

अरे,यह मनुष्य तन राम भजन कर चौरासी लाख योनी मिटाने का साधन है फिर भी तू राम भजन नहीं करता। इस देह की वंछना ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा तैंतीस करोड देवता का राजा इंद्र करता है। ।।५।।

बोरन नर तन पासी रे ।। भगत बिना पिस्तासी रे ।। ६ ।।

यह मनुष्य तन फिरसे सहज नहीं मिलेगा। चौरासी लाख योनि के तैंतालीस लाख बिस हजार साल तक कठिण दु:ख भोगेगा तब यह मानव तन फिर से मिलने के योग आते और वह भी तब कहाँ मिलता,जहाँ सतगुरु है वहाँ मिलता या जहाँ विषय वासना के रुप में काल बैठा है वहाँ मिलता,पुरे उम्र का मिलता या कच्चे उम्र का मिलता यह कुछ मालूम नहीं है इसलिए इस मनुष्य शरीर से भक्ति नहीं करने पर अंत समय पश्चताप करोगे। ।६।

राम भजन के काजा रे ।। तुं मत्त खोय अकाजारे ।। ७ ।।

सतगुरु मिले ऐसा आज के समान इतने चौरासी लाख योनी के दु:ख भोगने के पश्चात भी दोबारा मिलेगा नहीं इसलिए यह अनमोल मनुष्य तन को हाथ से गमा मत, तू रामजी की भक्ति कर। रामजी के भक्ति बिना चौरासी लाख के हर योनि में तु दु:ख पाकर हर पल में बहुत पछताएगा। यह मनुष्य तन रामभजन करने के लिए दिया गया है। इसे ब्रम्हा, विष्णु,महादेव,शक्ति,वेद,शास्त्र,पुराण,भागवत गीता आदि में गमा मत और सिर्फ राम भजन कर। ।।७।।

तन धन जोबन माया रे ।। आ बादळ की छाया रे ।। ८ ।।

यह तेरा निरोगी तन,यह तेरा भरपूर धन और जवानी बादल के छाया समान है। जैसे बादल की छाया दिखती नहीं दिखती तब तक नष्ट हो जाती ऐसा ही तेरा तन,धन,जवानी जाने को देर नहीं लगेगी। ।।८।।

कह सुखदेव नर दे मूंगी रे ।। ओ मूरख जाणे सूंगी रे ।। ९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,यह मनुष्य तन बहुत बहुत महँगा है परंतु मुर्ख मनुष्य इसे तुच्छ,हलका,फालतु,बेकाम का समझकर त्रिगुणी माया में लगाते और व्यर्थ गमाते। ।।९।।

३२३

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

साहेब जी सें डरीये मन रे

साहेब जी सें डरीये मन रे ।। साहेब जी सें डरिये रे ।।

पल मे राव करे भिकियारी ।। जीवत छिन मे मरिये रे ।। टेर ।।

अरे मन,अरे जड जीव,तु साहेबजी का सदा भारी डर रख। साहेब बलवान है,वह किसीको भी पल में राजा बना सकता तो वह किसीको भी पल में राजा का रंक बना सकता। वह किसीको भी पल में मार सकता तो वह किसीको भी पल में ही मरे हुए को जिवीत कर सकता। इसीप्रकार तुझे साहेब ने राजा बनाया और तेरा देह सभी सुख लेते आते, उससे भक्ति करते आती ऐसा पूर्ण जवान बनाया मतलब तू उसीके कृपासे राजा है और उसीके कृपासे जिवीत है इसलिए तू मन में इंद्रियों के बल पर मगरुर न बनते साहेब से सदा डरते रह मतलब इससे बेमुख न होते उसकी भक्ति कर। उसकी भक्ति न करनेसे उसकी अवकृपा होगी और उसकी अवकृपासे तू भी पल में ही राजा का रंक हो सकता और पल

में ही तेरा प्राण देह से निकल सकता इसका ध्यान कर। ।।टेर।।

मन मगरूर फूल मत भाई ।। अर तामस चित्त नहीं धरणारे ।।
तूं जढ जीव नीर को बुद बुद ।। पग पग प्रळे पडणारे ।। १ ।।

अरे मेरे भाई मन,तन,धन,जवानी इस माया के झुठे बल पर तू मगरुर बनके फुल मत और चित्त में फुलके झूठा तामस ला मत। अरे मन,अरे जड जीव जैसे पानी का बुलबुला फुटने को जरासा भी समय लगता नहीं ऐसाही तेरा देह पानी के बुलबुले समान प्रलय में जाने को जरासी भी देर लगेगी नहीं। अरे जड जीव,पग पगपर याने किसीभी पल तेरा देह प्रलय में पड़ेगा ऐसी तेरे देह की पग पगपर फुटनेवाले पानी के बुलबुले समान स्थिती है। ।।१।।

धेकर धाक छाड या ममता ।। मे मे जोर न करिये रे ।।
क्रणहार स्मर्थ हे न्यारो ।। तो सूं कछु अन सरियेरे ।। २ ।।

तू साहेब से द्वेष,धाक करना छोड दे उलटा उससे प्रेम कर और मेरी काया,मेरी पत्नी,मेरा राज,मेरा धन,मेरे पुत्र,पुत्री इन झुठे माया से लगी हुयी ममता त्याग दे। जवानी और माया के जोर पर फुलकर मैंने किया,मैंने किया यह झुठा जोर भी मत कर। करनेवाला समर्थ निराला है,वह तू नहीं है तथा तेरे बल से एक भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता यह समज। ।।२।।

आसा राख कहो क्या लेसी ।। च्यार दिनाके तांई रे ।।
जां के लिये अड़े नर अंधा ।। छोड चले छिन माहिरे ।। ३ ।।

अरे जीव,तू कुल परिवार,पत्नी,पुत्र,पुत्री,धन,राज के बल पर सुख पायेगा यह आशा रखने पर सदा के लिए कोई सुख नहीं मिलेगा उलटे दु:ख ही पडेंगे। यहाँ पर तुझे चार दिन के लिए याने तेरा अंत कब आएगा यह तुझे समजेगा भी नहीं ऐसे कम समय के लिए देह मिला है। अरे अंधे,तू जिन जिनके लिए साहेब से अड्ता है,उन्हें एक पल में ही छोड जाना पड्ता है। ।।३।।

मत उत्पात उठावो बोळी ।। निरख प्रख पग ध्रणारे ।।
के सुखराम झूट सब हलमा ।। ने छे तो कूं मरणा रे ।। ४ ।।

अरे जीव,तू साहेब से दुर जावे ऐसी कोई उत्पात याने कुकृत्य कर मत और हर पैर देख देखकर याने फुँक फुँक कर रख। अरे जीव,तेरा देह झुठा है और तेरे देह से जुडा हुआ सारा प्रपंच भी झुठा है। तुझे भी निश्चित ही मरना है और मरने पर तेरे से जुडा हुआ सारा प्रपंच भी तेरे से टुटना है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जीव को कहते है। ।।४।।

३२९
।। पदराग बसन्त ।।

समझो हो नर समझ नार
समझो हो नर समझ नार ।। बिन भगती ध्रक जीवो संसार ।। टेर ।।

अरे स्त्री–पुरुषो,दोनो भी समजो,सतस्वरुप के भक्ति बिना इस संसार में जो जिना है वह उस जिने को धिक्कार है। ।।टेर।।

भजन बिनाँ नर सरब अेम ।। कीट स्वान पशु पंछी जेम ।।

राज पाट सुर लोक कहाय ।। हर नाम बिनाँ सुण जम खाय ।। १ ।।

मनुष्य देह मिलने के उपरान्त भी सतस्वरुप के भजन बिना सभी नर–नारी किडे,मकोडे, कुत्ते,पशु और पंछी समान है। इन किडें,मकोडें,कुत्तें,पशु,पंछी को सतस्वरुप की भक्ति करते नहीं आती और नर–नारी को भक्ति करते आती फिर भी करते नहीं इसलिए न भक्ति करनेवाले सभी सरीखे है चाहे वे पशु पंछी रहो या मनुष्य देह रहो,सभी सरीखे है, तुच्छ है। स्वर्ग के लोक में जैसे सुख मिलते वैसा सुखवाला राजपाट मिला है फिर भी हरीनाम न लेने कारण ऐसे राजा,बादशाह को जम खाता है। ।।१।।

सावधान बुध अकल जोर ।। निरख परख कहे सरब ठोर ।।

द्रव्य अपार अखूट होय ।। भजन बिनाँ नर चल्यो हे रोय ।। २ ।।

मनुष्य कितना भी सतर्क है,हुशार है,बुध्दी,अक्कल बहोत है,सभी काम निरख परख के करता है,द्रव्य अपार है,अखूट है परंतु सतस्वरुप का भजन नहीं है ऐसे हुशार धनवान को अंतसमय जब जम ले जाता है तब रोते रोते यह जाता है । ।।२।।

करत तप बोहो जोग जुग ।। लेत बीज सरब सुभ चुग ।।

कसर कोर नहि रखी मॉय ।। पण बिनाँ नाँव नहि मोख जाय ।। ३ ।।

संसार में कितने ही जोग साधते है,जप करते है,तप करते है सभी शुभ शुभ करणियाँ चुन चुन कर करता है और खुद के अंदर काम,क्रोध,लोभ,मोह,मत्सर,अहंकार तथा विषय विकारों की कोई कसर कोर नहीं रखता है फिर भी नाम नहीं जपा इसलिए मोक्ष मे नहीं जाता है। ।।३।।

के सुखदेव बिचार बिमेक ।। सब हार चले नर नार देख ।।

मिनख जनम अमोलक पाय ।। गुरू के भेद बिनाँ चले गमाय ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,विवेक से विचार करो की इसतरह ये सभी स्त्री–पुरुष अपना मनुष्य तन हारकर चले है। यह मनुष्य शरीर मिलने पर भी गुरु का भेद नहीं मिला,राम सुमिरन नहीं किया,तो यह अमोलक मनुष्य जन्म सभी नर–नारी गमाकर चले है। ।।४।।

३३२

।। पदराग बिहगडो ।।

संता भजलो केवळ रामा

संता भजलो केवळ रामा ।।

ररो ममो सत बीज शबद हे ।। ले पहुँचे निज धामा ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगत के नर–नारीयों को कह रहे है की,हे नर–

नारीयों,आप सभी केवल रामका भजन करो।यह रकार,अकार,मकार याने राम शब्द सत्त याने केवल राम पाने का मूल बीज है। यह सत्त का बीज याने केवल राम प्रगट हो जाने पर हंस निजधाम याने महासुखों के देश पहुँचता। ।।टेर।।

जम की झपट बुरी हे भाया ।। सुण ज्यो सब नर नारी ।।
राम भजन बिनाँ प्रथन बंचो ।। मार पडेगी भारी ।। १ ।।

जम की झपट बहुत ही बुरी है। यह सभी स्त्री-पुरुष सुन लो। केवल राम के स्मरण सिवा त्रिगुणी माया की कोई भी क्रिया,करणी मत करो। यह क्रिया करणियाँ जैसे जप,तप,सत, तिर्थ,व्रत,उपवास,एकादसी,राजसुययज्ञ,अश्वमेघयज्ञ,सांख्ययोग,पवनयोग,हटयोग,ओअम की साधना,खेचरी,भुचरी,आदि मुद्राओंकी साधनाएँ साँस-साँस में का राम राम आराधना (साँस उसाँस में नहीं),नवविद्या भक्ति आदि सभी माया की भक्तियों से कोई भी हंस जम की झपट से बचनेवाला नहीं इन सभी के उपर जम की भारी मार पडेगी। ।।१।।

ले सो स्वाद जमा के वो घर में ।। अे बातां वाँ पासो ।।
साँम बिनाँ जिण ज्याँ बिध कीनी ।। तीन लोक मे खासो ।। २ ।।

ये अनेक प्रकार के भारी मार खाने के अनुभव जमों के घर याने होणकाल में पाओगे। सत्तस्वामी की भक्ति छोड के जिसने जिसने जैसे जैसे बाता याने कर्म किए वैसे वैसे जमो का मार तीन लोको में खाओगे। ।।२।।

खबराँ पडसी वाँ दिन भाया ।। सोचो रे जन लोई ।।
ब्हाँल पडेग़ा अंतकाळ में ।। सुण लीजो सब कोई ।। ३ ।।

अरे सभी भाइयो,जिस दिन अगणित अनेक प्रकार का मार पडेगा उसी दिन कैसे न सहे जानेवाला मार है यह समज में आएगा। ऐसा कठिन मार पडेगा यह ज्ञान समज से सभी नर नारीयों अंतकाल आने के पहले आज ही सोचो। बिना केवल रामा अन्तकाल में हाल होंगे याने यम बहोत बुरी अगती करेगा यह तुम सभी नर-नारीयों सुन लो। ।।३।।

चेतन व्हो क्हे सुखदेवजी ।। क्युं ओ जनम गमावो ।।
ओ सुण जनम अमोलख हीरो ।। नेड़ो निकट न पावो ।। ४ ।।

इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर-नारीयों को कहते है की,तुम सभी चेतन हो जाओ मतलब होशियार हो जाओ। तुम सभी को मनुष्य देह का जन्म मिला है, यह जालीम काल से छुटकारा पाने के लिए अमोलक हिरा है। यह ऐसा भारी अमोलक मनुष्य देह हिरा हाथ से क्यों गमा रहे हो?यह हिरा हाथ से चले जानेपर नजदीक के समय मे पुन:मिलनेवाला नहीं। यह हिरा फिरसे प्राप्त होने के लिए ४३,२०,००० साल तक ८४,००,००० योनि में जम के याने निरंजन होनकाल के अनेक जुलूम सहने पडेंगे। ।।४।।

संतो काळ सिर भारी हे
संतो काळ सिर भारी हे ।।
ओ सब कूं खाया जाय ।। छाडो करम उपाय ।।टेर।।

संतो,सभी के सिरपर सभी को चुट चुटकर खानेवाला भारी काल बैठा है। वह सभी को खाये जा रहा है। यहाँ तक की वह सभी कर्म के कर्ताओंको याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेवको खाये जा रहा है इसलिए जिन कर्म कर्ताओंने मतलब ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ने काल से बचने के लिए कर्म उपाय किए है वे कर्म उपाय उन कर्ताओं के काम नहीं आ रहे है ऐसे झुठे है इसलिए तुम भी संतो उन कर्म उपायो को त्यागो।।टेर।।

ब्रम्ह बाग मे मै रमू रे ।। सुन्न सिखर घर जाय ।।
गढ चढ हेला देत हुँ रे ।। बंधि जगत के माय ।।१।।

मैंन कर्म उपाय त्यागे और सतस्वरुप ब्रम्ह विज्ञान पाया। सतस्वरुप ब्रम्ह विज्ञान के पराक्रम से मैं जम के परे दसवेद्वार में निर्भय होकर ब्रम्हबाग में रम रहा हुँ। मैंने माया और काल के परे के सुन्न शिखर में घर किया हुँ इसलिए मैं गढ चढकर सुन्न शिखर के घर से सभी जगत के नर–नारी को ज्ञान आवाज दे रहा हुँ। ।।१।।

सतगुरू सरणो लीजियो रे ।। ब्रम्ह ग्यान सुण आय ।।
काळ डरे करतार सूं रे ।। ओर सकळ कूं खाय ।।२।।

सभी जन सतगुरु की शरण लो और सतगुरु के पास आकर ब्रम्हज्ञान सुनो,वह काल सिर्फ कर्तार से डरता है,शेष सारे संसार को काल खाता है। ।।२।।

ब्रम्हा बिसन महेस कूं रे ।। चाँद सूर कूं ई खाय ।।
पवन पाणी इंद कूं रे ।। धर आकास मिटाय ।।३।।

यह काल सभी कर्म कर्तार ऐसे ब्रम्हा,विष्णू,महादेव को खाता। यह काल चाँद,सुरज,हवा, पानी,इंद्र,धरती,आकाश आदी को महाप्रलय में खाकर मिटा देता। ।।३।।

पूरण परमानंद को रे ।। सरण गहो तुम आय ।
काया मे करतार सूं रे ।। मिलो रेण दिन ध्याय ।।४।।

इसलिए तुम ब्रम्हा,विष्णू,महादेव आदि कर्मी माया को त्यागकर विलंब न करते पूर्ण परमानंद के शरण जाओ और काया में जिसे काल डरता ऐसे सतस्वरुप कर्तार को रात–दिन भजकर मिलो। ।।४।

मानव देह तन पावणो रे ।। सके तो लेखे लाय ।।
सुखदेव हेला देत हें रे ।। पीछे सरेनी काय ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अरे प्राणी,यह मानव तन चंद दिनों का पावना है,इसे काल कभी भी खाकर मिटा देगा। इसलिए इस मिले हुए मनुष्य तन पावना को ऐसे ही मत गमाओ। उसे ब्रम्ह कर्तार पाने के लिए लगाओ। यह मानव तन पावना

हाथ से छुट जाने पर तुम्हारा काल से बचने का काम नहीं सरेगा यह ज्ञान दृष्टी से समजो। ।।५।

३८४

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

सुण लिज्यों लो सुण लिज्यों लो

सुण लिज्यों लो सुण लिज्यों लो ।। समझर धारा बिचारी रे लो ।।

भगत बिनॉ नर मुगती नाही ।। जाय जनम सो हारी रे लो ।। टेर ।।

अरे लोगो,मेरा सत्तग्यान सुण लो। मेरा सत्तग्यान सुण लो। मैं कहता हुँ उसे समजकर धारण करो,हरी के भक्ति बिना परम मुक्ति नहीं है यह बिचार करो। भक्ति के बिना जिता हुवा तुम्हारा मनुष्य जन्म हारे जा रहा है। ।।टेर।।

भजन बिना जुग ध्रक जनम है ।। काहा पुरूष काहा नारी रे ।।

धनवंत राव कहां निरधन रे ।। छुछम बुध कहां भारी रे लो ।।१ ।।

हरी के भजन बिना नारी रहे या नर रहे उसके मनुष्य जन्म को धिक्कार है। धनवंत रहे ,या निरधन रहे,या चतुर बुध्दि का रहे,या छोटी बुध्दि का रहे हरी का भजन किए बिना सभी के मनुष्य देह को धिक्कार है। ।।१।।

सुरता बकता मुरख ज्ञानी ।। हर बिन निसदिन गावे रे ।।

निजकण नांव अरध बिन जाण्या ।। सबकूं जंवरो खावे रे लो ।।२ ।।

श्रोता रहे,या वक्ता रहे,मुर्ख रहे,या ज्ञानी रहे हरी बिन अन्य देवताओंको रात-दिन गाता है उसके मनुष्य देह को धिक्कार है। निजकण नाम बिना याने आधा ररंकार शब्द घट में प्रगटे बिना सभी को यम खा जाता। ।।२।।

हुनर कोट कला बहो सीख्यो ।। नाना बिध का सारा रे ।।

अेके नांव लिया बिन घर ओ ।। बेग्यो काली धारा रे लो ।।३ ।।

करोडो प्रकार के ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति के हुन्नर सिख लेता,नाना प्रकार की करणियाँ सिख लेता परंतु एक हरी का नाम नहीं लेता इसलिए परममुक्ति नहीं मिलती,जम के जुलुमों के काली धारा में बह जाता। ।।३।।

चेत चेत मन चेत सवेरों ।। समज सोच मन भाई रे ।।

के सुखराम मोख को मोसर ।। अबके चूक न जाई रे लो।।४ ।।

अरे मन,होशीयार हो,जल्दी होशियार हो और समजकर सोच विचार कर,अबके मिला हुआ मोक्ष जाने का अवसर चुकने मत दे। ।।४।।

३८५

।। पदराग धनाश्री ।।

सुणज्यो नर सब आय केरे

सुणज्यो नर सब आयके रे ।। दीया म्हे हेला ।।

जनम अमोलक जायहे रे ।। तूं राम कब केला ।। टेर ।।

आपका अमोलक मनुष्य जन्म बिना राम बोले व्यर्थ जा रहा है यह मैं आपको हाँक मारकर कह रहा यह सभी लोग सुनो और अब तुम राम कब कहोंगे यह मुझे बताओ ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी,नर–नारी को बोले। ।।टेर।।

ध्रिग ध्रिग तां को जनम हे रे ।। जा घट भक्त न होय ।।
बिन सिंवरण नर नार हे रे ।। जाय जनम कूं खोय ।। १ ।।

जिसके घट में रामजी की भक्ति नहीं है उनके मनुष्य जन्म को धिक्कार है,धिक्कार है। बिन राम सुमिरन यह जगत के सभी स्त्री–पुरुष अपना अमोलक मनुष्य देह गमाते जा रहे है। ।।१।।

गुरू सेवा बिन बंदगी रे ।। ओ नर जनम अकाज ।।
क्या ग्यानी क्या मूरखा रे ।। ध्रग सिंवरण बिना राज ।। २ ।।

ज्ञानी रहो,मुरख रहो,राजा रहो या प्रजा रहो सतगुरु समझाते उस रामजी की सेवा बंदगी बिना याने भक्ति बिना इन सभी का नर जन्म बेकाम जा रहा है इसलिए इन सभी को धिक्कार है,धिक्कार है। ।।२।।

सुख संपत धिरकार हे रे ।। जे जन पूजे नाय ।।
तो युंही नर खोय गयो रे ।। ज्युं जळ कूवा माय ।। ३ ।।

जैसे उंडे कुएँ में जल बहुत है परंतु वह जल किसी भी पशु पंछी को पिते नहीं आता है ऐसे कुएँ को और जल को धिक्कार है,धिक्कार है ऐसे ही जिस स्त्री–पुरुष के पास धन संपदा,राज संपदा बहुत है उस सम्पदा का उपयोग जगत को काल से मुक्त करने के संत कार्य में नहीं लाया है या नहीं लाते है,भोगादिक में लगा दिए या लगा देते है ऐसे सुख संपदा को और स्त्रि–पुरुषोंके मनुष्य देह को धिक्कार है,धिक्कार है। ।।३।।

आतम मे परमात्मा रे ।। तां कूं खोजे नाय ।।
सो सो देहे धिक्रार हे रे ।। बंध्या जम पूर जाय ।। ४ ।।

आत्मा में परमात्मा है उसे खोजते नहीं और परमात्मा को व्रत,एकादसी,तिर्थ,जप,तप, सत,यज्ञ,जोग,ब्रम्हा विष्णू महेश के भक्तियों में,राक्षसी देवताओंके भक्तियों मे जोर लगा लगाकर खोजते ऐसे नर नारियों के मनुष्य देह को धिक्कार है,धिक्कार है। ये सभी नर–नारी होणकालरुपी जमपुरी में,गर्भ के दुःख,नरक के दुःख,चौरासी लाख योनि के, आवागमन के दुःख,आधी,व्याधी,उपाधी के दुःख भोगते हाल अपेष्टा सहते पडे रहते। ।४।

पूरण पद के भेद बिना रे ।। जे रत्ता जुग माय ।।
सो सो सब ध्रकार हे रे ।। मूळ ठगाणा आय ।। ५ ।।

पुरण पद के भेद बिना जो जो नर–नारी होणकाळ के भक्तियोंमे रचमच गए उन सभी नर–नारी के मनुष्य देह को धिक्कार है,धिक्कार है। उनकी रामजी से ७७,७६,००,००० साँस की पाई हुई पुंजी होनकाल ने काल कपट से माया के भक्तियोंमें लगवाकर ठग ली

है। ||५||

भक्त बिना सब जक्त हे रे || क्या सिध पीर कुवाय ||
धिग धिग सो सुखराम कहे रे || हर बिन रत्ता आय || ६ ||

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,रामजी के भक्त बिना सभी जगत के सिध्द,पिर,ज्ञानी,ध्यानी नर–नारी के मनुष्य देह को धिक्कार है,धिक्कार है। जो जो भी रामजी के बिना होनकाल के विधीयोंमें रचमच गए उन्हें धिक्कार है,धिक्कार है। ||६||

३९३

|| पदराग बिहगडो ||

सुणो सब यां बातां किम पावे ||
स्मरथ स्याम मुक्त को दाता || प्रीत बिना क्यूं आवे || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारीयों से कहते है कि,सभी लोग सुनो, बिना प्रितीसे एक मनुष्य भी दुजे मनुष्य के यहाँ जाता नहीं यह सभी जगत के नर–नारी जानते इसलिए इस समज से सभी नर–नारिया मायावी वस्तूओंसे भारी प्रिती करते और जो सर्व सृष्टी में समर्थ है और सर्व सृष्टी के मुक्ति का दाता है उससे प्रिती बिलकुल नहीं करते तो वह समर्थ साँई तुम्हारे घट में तुम्हारे प्रिती बिना कैसे प्रगट होगा?यह ज्ञान से बिचार करो। इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जगत को समर्थ साँई के साथ कैसी प्रिती नहीं यह दाखलो के साथ बताया है। ||टेर||

पईसे ब्याज टके लग काटे || ब्याव बीरद के तांई ||
साहेब काज उधारो मिलतां || ओ मन लेहेन जाई || १ ||

किसीके घर कुछ शादी विवाह आदि अवसर पर पैसा घर में नहीं रहा तो उंचा ब्याज लगा तो भी ब्याज बट्टा से कर्ज लेता और विवाह कार्य संपन्न करता परंतु साहेब के कारज के लिए कोई पैसा उधार बिना ब्याज से देता है तथा साथ में जब बनेगा तब वापीस लौटाना इस समज से देता है फिर भी यह मन रुपये उधार लेने को तैयार नहीं रहता। इसका ही अर्थ यह होता कि मायावी ब्याव विवाह से प्रिती थी इसलिए कैसे भी धन लेकर कार्य करने की तैयारी हुई और समर्थ साहेब से प्रिती नहीं थी इसलिए धन सहज मिलता था तो भी मन से लिए नहीं गया,यह सभी ज्ञान से समजो। ||१||

ब्याव खर्च न्यात के लेणे || सीस अडाणो मारे ||
कर्ता निमत कदे ओ मन मे || घर मे थकां न धारे || २ ||

घर में शादी या बारवा या कुटूंब परिवार से जुडे कार्य का खर्चा रहा तो वह खर्चा पुरा करने के लिए स्वयम् का शिर बंधक रखके रुपये लाते और कार्य करते। यह बंधक रखने की रीती मारवाड देश में है परंतु कर्ता जिसने हर किसीको बनाया ऐसे कर्ता के कार्य के निमित्त से घर में रुपये रहे तो भी कोई खर्च करना नहीं चाहता। इस पर से जगत की माया से प्रिती रही और साहेब से अप्रीती रही यह स्पष्ट होता यह सभी ज्ञान से समजो।

||२||

सांई निमत पईसो सिरपे || करण करे नहींकोई ||
करमा काज जक्त सुण लेणो || मिलतां मुडे.न लोई || ३ ||

उस स्वामी के लिए पैसे का कर्ज कोई शिरपर धारण नहीं करता परंतु कर्मो के लिए संसार के लोग कर्ज मिले वहाँ तक जरासे भी पिछे हटते नहीं। इस पर से स्वामी से प्रिती नहीं है और संसार से बडी प्रिती है यह सभी ज्ञान से समजो। ||३||

देको तन्नु बीछड्या जुग मे || सब रोवे दुख छीजे ||
सिरझण हार मीलण के काजा || सपने ई आंख न भीजे || ४ ||

जो शरीर के याने तन के इष्ट मित्र,पुत्र-पुत्री,पती-पत्नी,माँ-बाप और दामाद,मेहमान वगैरे तो क्या परंतु अपनी पुत्री ससुराल जाती है या दुसरे कोई अपने से अलग कही जाते है तो बिलग बिलग कर रोते है,दु:ख करते है तथा दु:ख करके झुरते कि अब हम कब मिलेंगे परंतु सिरजनहार साहेब से हम बहोत युगोंसे अलग हुए है ऐसा किसी को सोच भी नहीं आता तथा ऐसे सिरजनहार को मिलने के लिये स्वप्न में भी आँखों से आसूँ नहीं आते। इसका ही अर्थ संसार के हर नर-नारी शरीर से जुडे मायावी माँ-बाप,पत्नी- पत्नी ,पुत्र-मित्र आदि से प्रिती है परंतु जीव से जुडे हुए परमात्मा से प्रिती नहीं है फिर वह समर्थ साहेब मुक्ति का दाता जीव के घट में कैसे प्रगट होगा?यह सभी ज्ञानसे देखो। ।४।

खेती किसब करे तन खोई || दाम लगावे आणी ||
के सुखराम भक्त की बेळा || सब सेल बिध जाणी || ५ ||

खेती तथा धंदा यह मेहनत का किसब है फिर भी खेती तथा धंदा करने में शरीर का नाश कर देते तथा कर्जा लेकर पैसा भी लगाते परंतु भजन की विधी बिना तकलिफ की ,सहज आसान है फिर भी भक्ति करने की कोई जरासी भी चाहना नहीं रखता याने ही साँई को घट में प्रगट करने की जरासी भी प्रिती नहीं है फिर वह समर्थ साई जो काल से मुक्ति करानेवाला दाता है। वह तुम्हारे घट में कैसे प्रगट होगा?इसका आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर-नारियों को कहते है। ||५||

३९५
|| पदराग जोग धनाश्री ||

ताकू भूलो तू आन धियावे

ताकू भूलो तू आन धियावे || आ मुगत किसी बिध पावे रे लो || टेर ||

तेरेपर उपकार करनेवाले रामजी को तू भूल गया और जिसके तेरे उपर कोई उपकार नहीं ऐसे अन्य सभी ब्रम्हा,विष्णू,महेश,भेरु भोपा,पिर आदि देवो की भाग भाग कर आराधना करता तो तेरी काल से मुक्ति किस तरह होंगी?यह सतज्ञान से समझ। ||टेर||

गरभ वास मे रिछ्या कीनी || नख चख तोही बणाया रे ||
देवळ मांड कियो हर असो || मांहि रमण हर आया रे लो || १ ||

उसने तेरी गर्भवास में रक्षा की और तेरे नख से लेकर आँखों तक सभी अवयव बनाए और तेरा शरीर रुपी देवल घड्कर तेरे साथ खेलने के लिए हर स्वंयम् तेरे घट में आया। ।।१।।

देवळ की तजबीज ज देखे ।। कैसे घाट हर ल्याया रे ।।
तीन लोक फिर सब हम देख्यो ।। अेसो काहु न बणाया रे लो ।। २ ।।

रामजी ने बनाए हुए देवल की तजबीज देखो, रामजी ने कैसे कैसे घाट बनाए, तीन लोक फिरकर देखा तो ऐसा देवल तू जिसको भजता ऐसा कोई देव नहीं बना सकता। ।।२।।

माँहि झरोखा रे कैसा राख्या ।। न्यारा न्यारा गुण राखे रे लो ।।
देखे सुण ले बासा लेवे ।। एक बाणी बोहो भाखे रे लो ।। ३ ।।

इस देवल में झरोखे याने खिडकियाँ अलग अलग बनाकर उसमें न्यारे न्यारे गुण डाले,तू दो झरोखे से सुन सकता,दो झरोखे से खुशबु ले सकता,दो झरोखे से देख सकता तो एक झरोखे से बोल सकता,चटपटे स्वाद का भोजन कर सकता ऐसा हर ने तेरा देवल बनाया। इस हर को तू भूल गया और अन्य देवोने ऐसा कुछ नहीं किया उनका ध्यान करता। ।।३।।

खाड्डा खपचारे कांट्या सूं टाळे ।। जतन करे दिन राती रे ।।
तीन लोक में ज्याँ त्याँ फिरसी ।। साहेब रहे तेरे साथी रे लो ।। ४ ।।

आँखों के झरोके से गड्डे,खपचे,काँटे दिखते जिस कारण तू तेरा इन गड्डे,खपचे और काँटोंसे होनेवाले कष्ट टाल सकता ऐसा हर नाना विधीसे तेरा जतन करता। तिन लोक में तू कर्मो के कारण जहाँ वहाँ फिरता वहाँ तेरे साथ काल रहता उससे बचाने के लिए जहाँ वहाँ हर तेरा साथी बनकर साथ में रहता। ।।४।।

अे गुण तो सूं साहिब कीया ।। फेर कियाँइ जावेरे ।।
तूं जढ भूल रहयो हे साहिब ।। तोई रिजक दिरावे रे लो ।। ५ ।।

ये सभी गुण साहेब ने तुजमें किए और अधीक ही आगे कर ही रहा है और तुझे स्वादिष्ट भोजन समय समय पर दे रहा है ऐसे साहेब को तू जड जीव भुल गया और अन्य ब्रम्हा, विष्णु,महादेव,शक्ति की आराधना कर रामजीसे मुक्ति की आशा कर रहा है तो रामजी मुक्ती कैसे देंगे?।।५।।

के सुखराम लाणती रे जीवा ।। पीव छाडर आनजँ वारो रे ।।
मिनखा जलम अमोलख हीरो ।। कोंडी साटे मत हारो रे लो ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले अरे जीव,तू मालिक को छोड्कर अन्य देवताओं को पुजता अरे जीव,तुझे धिक्कार है। तेरा मनुष्य देह अमोलक हिरा है। यह अमोलक हिरा अनंत सुख पाने के लिए मिला था,वह कौडी मोल सुखों के लिए गमा दिया। ।।६।।